[illegible] —

श्री कण्ठमणि शास्त्री 'विशारद'

श्रीविद्या-विभाग

कांकरोली

१९३२

श्रीदुलारेलाल

अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस

लखनऊ



तृतीयपीठाधीश्वर गोस्वामीश्री १०८

श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज, कांकरोली.

(श्रीद्वारिकेशकविमण्डलके अध्यक्ष)

सरैया आर्ट प्रि. अमदावाद

श्रीद्वारकेशो जयति

प्राक्कथन

"काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्"

श्रीशुद्धाद्वैत सम्प्रदाय तृतीय पीठाधीश्वर, कांकरोली-नरेश, गो० श्री १०८ व्रजभूषणलालजी महाराज के (फा० कृ० २, स०८७) शुभ जन्म-दिनोत्सव पर आपकी आज्ञा एव इच्छानुसार "श्रीद्वारकेश-कविमण्डल" कांकरोली की स्थापना की गई थी। मण्डल की अध्यक्षता महाराज श्री को समर्पित की गई और मन्त्रित्व का भार नारायणलाल (नरेन्द्र) वर्मा विशारद को प्रदान किया गया। इस प्रकार आप श्री के जन्म-दिन मङ्गल शासन को हिन्दी, संस्कृत कविताएँ—जो "मङ्गलमणिमाला" के रूप में विद्या-विभाग द्वारा प्रकाशित होती हैं—"श्रीगणेश" रूप से कवियों द्वारा पढ़कर सुनाई गई। इस प्रकार मण्डल की स्थापना-समारोह का उत्सव बड़े आनन्द से सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से नियम-निर्माण तथा कार्य-संचालन की व्यवस्था "विद्या-विभाग" के तत्त्वावधान में निश्चित हुई और मण्डल उसका एक अंग बना दिया गया।

इस 'मण्डल' का मुख्य उद्देश्य हिन्दी, संस्कृत-साहित्य-प्रचार, साहित्य-रक्षा तथाच कविता को व्यापकता प्रदान करने के साथ अन्य कवि-मण्डलों से सहयोग स्थापित करना है। यद्यपि नियमानुसार प्रति पंद्रहवें दिन इसका अधिवेशन होना निर्धारित था, तथापि विदेशस्थ कवियों की रचना इतने स्वल्प समय में प्राप्त हो जाना असंभव नहीं तो अधिक समय सापेक्ष तो अवश्य था—अतः उसे मासिक अधिवेशन का रूप प्रदान किया गया। अतएव पत्र-व्यवहार तथा विशेष सूचना न हो सकने से प्राथमिक कुछ अधिवेशनों में हमें स्थानीय कवियों के सिवा अन्य कवियों की रचनाएँ अधिगत करने के सौभाग्य से वंचित और साधारण कविताओं से ही संतुष्ट रहना पड़ा। पर तदनन्तर प्राप्त हुए सुन्दर भाव-पूर्ण, रचना-सौरभ ने हमें आनन्दित कर दिया और हम अपने कर्तव्य में सर्वदा उत्साहित होते रहे। एतदर्थ कवियों का आभार मानने से हम विमुख नहीं हो सकते।

मण्डल के प्रत्येक अधिवेशन श्रीमानों की अध्यक्षता में सम्पन्न होते और कविताओं पर रहस्यरूपेण समालोचना की जाती थी। जो अध्यक्ष महोदय तथा अन्तरंग समिति तक ही सीमित रहती थी। इस प्रकार काव्य-विनोद से समय का सदुपयोग होता और भावुकों को आन्तरिक काव्यकला-कौशल

प्रकट करने का अवसर हस्तगत होता था। अध्यक्ष महोदय के प्रदेश पधारने पर दो-तीन अधिवेशन आपके अनुज गो० श्रीविट्ठलनाथजी महानुभाव की अध्यक्षता में भी सुचारु रूप से हुए। इसी बीच में मेरे मित्रवर मन्त्रीजी ने अपनी अलस-वृत्ति से एक ऐसा पैंतरा बदला कि मंत्रित्व का भार मेरे सिर आ पड़ा, और विवश होकर मुझे उसे उठाए रखना पड़ा है। भगवान् जाने इस "गले पड़े की बेगार" में मेरे उक्त मित्र हाथ बटाएँगे या नहीं ??

अस्तु, जैसे-जैसे मण्डल के प्रसिद्ध्यर्थ पत्र-व्यवहारादि होने लगा, वैसे-वैसे कवियों की काव्य-कादम्बिनी के सुखद दर्शन होने लगे और उनके शीतल सीकरों से हम सुखानुभव करने लगे। कुछ स्थानीय स्वाति-सुधा-लोलुप कवि चातकों की—जिनमें हमारे नरेन्द्र वर्मा की विशेष स्पृहा थी—यह अभिलाषा का होना अप्रासगिक और अनावश्यक नहीं था कि "समस्या-पूर्त्तियों की समालोचना स्पष्ट एवं समक्ष रूप से करनी चाहिए।" पर अध्यक्ष महोदय ने प्रारंभ में ही इस प्रकार के प्रतिरोध की आवश्यकता न समझकर प्रथम तो धारा-संपात से समस्त वसुधा को काव्य-स्नेह-सुधा से सिंचित होने देने में ही लाभ का अनुभव किया। अतः प्रथम वर्ष समालोचना की झंझावात को दूर ही रखने की भावना को अपनाना पड़ा है।

अध्यक्ष महाशय की इस नीति का एक कारण भी था, और वह यह कि—विदेशस्थ कवियों की कृतियों को उनके पीठ पीछे चाहे जैसी समालोचना, टीका-टिप्पणी की जा सकती है—पर अधिकांश स्थानीय कवियों में—जिनमें असहिष्णुता-वश सत्यश्रद्धा और नियम-प्रियता का अभाव है—कटुभाव उत्पन्न होने की संभावना से कार्य में शिथिलता आ जाने का पूर्ण भय था—और उससे अंकुरित काव्य-लता पर तुषार-पात हुए बिना न रहता। इस नियम ने असमर्थ कविता-रचयिताओं की आन्तरिक भावुक वृत्ति की बहुत कुछ रक्षा करने में प्रावरण का काम दिया है। इस प्रकार समालोचनानल में मोम की तरह पिघल जानेवाली कविता करनेवालों के लिये स्वर्ण-संयोग प्राप्त हुआ—इस प्रकार वे अपनी रचना को सुदृढ़, स्थायी और निकषोपल पर कसने योग्य बना सकने के उत्साह से वंचित नहीं किए गए। अस्तु, इसी कारण से मण्डल के प्रथम वर्ष के बारह अधिवेशन सानन्द और निर्विघ्न किये जा सकने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ और हम अपना अस्तित्व लेकर काव्य-रंगमंच पर किसी भी रूप में आज उपस्थित हो सके हैं।

मण्डल के बारहों अधिवेशनों में यद्यपि कई स्थानीय कवियों की कविताएँ अधिक रूप से पढ़ी गई थीं तथापि हमें आन्त-

रिक वेदना है कि हम उन्हें सर्वांश में संकलित कर प्रकाशित न कर सके। और करते भी कहाँ से? जब उनमें छन्द-शास्त्र के साधारण नियमों की पाबन्दी का भी अभाव था। कुछ कविताओं में हमें अक्षर-योजना, गणना और भाव की अपुनरुक्ति का विशेष ध्यान देकर संशोधन करना पड़ा है। इस प्रकार जिनकी कविताएँ अधिक रूप में ही नहीं, प्रत्युत प्रत्येक अधिवेशन में प्राप्त होने पर भी स्वल्प संख्या में प्रकाशित की गई हैं—उन कवियों से हम क्षमा-याचना करते हुए अनुरोध करते हैं कि वे हतोत्साह न होकर अध्ययनशीलता-पूर्वक अपनी वीजभावेन स्थित काव्य-शक्ति को झुलसने न देकर पल्लवित-पुष्पित और फलित करते हुए माता भारती के सेवक होने का सौभाग्य सम्पादित करेंगे। और इस प्रकार मण्डल से अपना स्नेह-सम्बन्ध सर्वदा स्थापित रक्खेंगे। इस प्रकार यह मण्डल यद्यपि अपने प्रथम वर्ष में कुछ उल्लेख योग्य कार्य नहीं कर पाया है, तथापि काव्य-मकरन्द-लोलुप, कवि-मलिन्द वृन्द की पुनीत परिचर्या में अपनी प्रथम वार्षिक समस्या-पूर्तियों के संग्रह को "कविता-कुसुमाकर" के रूप में समर्पित करता हुआ आह्लादित होता है। उपर्युक्त संग्रह में हिन्दी और संस्कृत दोनो ही भाषाओं की पूर्तियों को स्थान प्रदान किया गया है—इसका एकमात्र कारण अध्यक्ष महोदय की उभय भाषाभिज्ञता, प्रियता और कुलपरम्परागत प्रचार-प्रचुरता ही है।

शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय संस्थापक, जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य चरण के चरित्रावलोकन तथा इतिहास से यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होनेवाली हिन्दी-भाषा को समलकृत, परिपुष्ट और सक्षम बनाने का सर्वांश श्रेय इस सम्प्रदाय को ही समधिगत हुआ है—जिसने महा-कवि "सूर-सूर" के आदर्श-पूर्ण अलौकिक, काव्य-रस माधुरी से हिन्दी-भाषा का भडार रत्न-परिपूरित कर दिया है। "अष्ट-छाप" का परिज्ञान किस हिन्दी-भाषा-प्रेमी को नहीं है ? भारतेन्दु हरिश्चन्द की वैष्णवधर्मप्रियता और काव्य-रचना, प्रचार-पटुता से कौन आँखें फेर सकता है ? कहने का तात्पर्य यह कि हिन्दी-भाषा और इस सम्प्रदाय का इतिहास अन्यो-न्याश्रय सम्बद्ध है, जो त्रिकाल में भी भिन्न नहीं किया जा सकता है, फिर भले ही इसका श्रेय पक्षपात से अन्य किसी 'समाज' को प्रदान कर दिया जाय। पर यह एकान्ततः सत्य है कि हिन्दी-भाषा की प्रारम्भ से लेकर अद्यावधि रक्षा और प्रचार जितना इस सम्प्रदाय ने किया है, अन्य ने नहीं। इसमें सन्देह ही है कि यदि प्रारम्भ से ही हिन्दी-भाषा और सम्प्रदाय का 'मणिकाञ्चन' सयोग न होता, तो आज दोनों का ही न-जाने क्या पर्यवसान दृष्टिगोचर होता।

अस्तु, इसी वशपरम्परागत सम्प्रदाय की हिन्दी-भाषा-प्रियता

का ही प्रतिफल है कि सर्वदा सम्प्रदाय का झुकाव जिस प्रकार प्रमाण (शास्त्र) बल सुदृढ़ करने के लिये देवभाषा की तरफ़ रहा है—उसी प्रकार प्रचार के लिये हिन्दी-भाषा की तरफ़ रहा है, और रहेगा। सारांश यह कि हिन्दी-प्रचार के लिये सम्प्रदाय और सम्प्रदाय-प्रचार के लिये हिन्दी को उतनी ही आवश्यकता है, जितनी परस्पर वासर और वासरमणि की।

अध्यक्ष महोदय के पितृचरण नित्यलीलास्थ गोस्वामिकुल-भूषण श्री १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराज की काव्य-प्रियता और उदारता से तत्कालीन कवि-मण्डल अपरिचित नहीं था। आप समागत कवियों का जैसा आदर-सत्कार करते थे, कविता का भी आप पूर्ण स्वागत सत्कार करते थे। इतना ही नहीं, आप तद्विषय के पूर्ण ज्ञाता और सत्समालोचक थे। आप भी सहृदयाह्लादिनी कविता करते थे। यद्यपि इस विषय का पूर्ण इतिवृत्त हमें प्राप्त नहीं हो पाया तथापि इतना हमें अवश्य ज्ञात है कि आपने काशी में एक कवि-मण्डल* की स्थापना की थी, जिसके मन्त्री बाबू रामकृष्ण [illegible]र्मा सम्पादक "भारत जीवन" थे। एक बार काशी में [illegible]म्पन्न हुए आप श्री के जन्म-दिन के उपलक्ष में एतद्विषयक

---

* कवि-मण्डल की समस्या-पूर्तियाँ भी पुस्तकाकार प्रकाशित हो [illegible]चुकी हैं, विद्या-विभाग कांकरोली से प्राप्त हो सकती हैं।

समस्या दी गई थी, जिसकी पूर्तियाँ अनेक कवियों ने की थी। इसी प्रकार "बालकृष्णलाल की उदारता अनूठी है" इस समस्या की पूर्तियाँ पढने से अनेक कवियों की कृतज्ञता-मिश्रित हार्दिक वृत्ति का सहज ही अनुमान हो जाता है, और उससे महाराज श्री की सहृदयता, कविता-प्रियता एव पूर्ण उदारता का चित्र प्रत्यक्ष हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि आप-जैसे राज-वैभव-सम्पन्न थे, उससे कहीं अधिक सगीत-प्रेमी और विद्या-व्यसनी थे। आपकी गुणावली प० जगन्नाथ-प्रसादजी रत्नाकर तथा कविरत्न नवनीतजी चतुर्वेद से सुनी जा सकती है। नवनीतजी चतुर्वेद के चरित्र लिखते समय प० पद्मसिंह शर्मा-जैसे निष्पक्षपात समालोचक तथा हिन्दी के प्रकाण्ड पण्डित ने अपने "पद्म-पराग" में महाराज श्री के विषय में भाव-पूर्ण सुललित शब्दों से बहुत कुछ लिखा है। महाराज श्री के स्वहस्त-लिखित दो-तीन स्वरचित नाटक तथा कितने ही फुटकर कवित्त, सवैया, दोहा, ग़ज़ल आदि अध्यक्ष महोदय के पास सुरक्षित हैं—जिनके प्रकाशित करने का आयोजन "श्रीद्वारकेश कवि-मण्डल" कर रहा है। आप श्री कविता में अपना उपनाम 'कृष्ण' रखते थे।

इसी वश-परम्परागत भाषा-प्रियता के कारण अध्यक्ष महोदय की काव्य के प्रति रुचि होना स्वाभाविक है। आशा

होती है कि निकट भविष्य में आप स्वयं अच्छी कविता करेंगे। आपकी साहित्य-रचा, विद्या-प्रेम और कविता-प्रियता का निदर्शन आप श्री के हस्तकमल द्वारा स्थापित "विद्या-विभाग" है, जो आपकी अध्यक्षता, देख-रेख और स्वय कार्य-तत्परता से उत्तम कार्य कर रहा है। "श्रीद्वारकेश-पुस्तकालय कांकरोली" जिसमें संस्कृत-भाषा के सभी विषयों का मुद्रित और हस्त-लिखित नवीन और प्राचीन बृहत ग्रथ-समुदाय सुरक्षित है— और एक दर्शनीय संस्था है—आपही की विद्याभिरुचि का प्रत्यक्ष प्रमाण है—अनेक अप्राप्य, अमुद्रित एवं अनुपम हिन्दी-भाषा के गद्य-पद्य-विषयक ग्रन्थों की सूची शीघ्र तैयार होकर प्रकाशित की जायगी—और अप्रकाशित ग्रन्थों के प्रकाशन की क्रमशः व्यवस्था होगी। तात्पर्य यह कि पुस्तकालय, पाठ-शाला, धार्मिक प्रचार, प्रवचन, व्याख्यान, ग्रन्थ-प्रकाशनादि सभी विद्या-सम्बन्धी कार्यों में आप पूर्ण उत्साही और दत्तचित्त होकर कार्य करनेवाले हैं। स्वल्पवयस्क (२० वर्ष) होने पर भी आप योग्य नरेश और योग्य धर्माचार्य हैं—विशेष— "नहि कस्तूरिकाऽऽमोदः शपथेन विभाव्यते" इतना ही कहना हम पर्याप्त समझते हैं।

यद्यपि प्रस्तुत "कविता-कुसुमाकर" को हम यथेष्ट रूप से सदयहृदयाह्लादक और उत्कृष्ट साहित्य-सेवा नहीं समझते

हैं तथापि वाक्पति की यत्किंचित् सेवा समझकर इसे उन्हीं के भविक कोमल चरणारविन्दों में "त्वदीय वस्तुं" के रूप में समर्पण करना ही अपना परम कर्तव्य समझते हैं।

कविता के विषय में कुछ अभिप्राय व्यक्त करना हम अपने लिये अनधिकार चेष्टा और अपनी योग्यता से बाहर की बात समझते हैं। प्रस्तुत कविता कैसी है ? और कवियों की योग्यता क्या है ? उनकी काव्य कल्पना उपादेय या अनुपादेय है ? आदि जटिलवादों पर मूकीभाव ग्रहण करते हुए हम इतना ही कहकर विराम ले लेना चाहते हैं कि जो कुछ संग्रह था— उसमें अधिकांश यह है—और वह आपके सन्मुख है। इसकी समालोचना करना आपका—एवं अपनी त्रुटियों के लिये साञ्जलि क्षमा-याचना कर लेना मेरा कर्तव्य है—शमिति !

होलिकोत्सव,
सं० १९८८

विधेय —
पो० कण्ठमणि शर्मा विशारद
का० म० शु० का—वे—शा०
मंत्री श्रीद्वारकेश-कविमण्डल,
तथा सचालक—विद्या-विभाग, कांकरोली

"श्रीद्वारकेश-कविमंडल" कांकरोली

के

कवियों का संक्षिप्त परिचय

नाम — विशेष

या

पो० बालकृष्ण शास्त्रीजी 'विद्याभूषण' नाथद्वारा। आप
तैलङ्ग ब्राह्मण दतिया महाराज के दीक्षागुरु, और शुद्धा-
द्वैत सम्प्रदाय तथा समस्त दर्शनों के उद्भट एव तत्त्वज्ञ
विद्वान् हैं। सस्कृत-भाषा पर आपका पूर्ण आधिपत्य
है। वेदों के आप पूर्ण पण्डित हैं। आपकी सस्कृत-
समस्याओं की पूर्ति मनोहर और अप्रतिम होती है।
आपने नैन, प्राणप्यारो और बधाई है, इन हिन्दी-
समस्याओं की भी सस्कृतार्थ मे ऐसी सुन्दर पूर्तियाँ
की हैं, जो वास्तव में एक नवीन कृति है। पहिले आप
कांकरोली सम्प्रति नरेश के अध्यापक थे और अब नाथ-
द्वाराधीश के प्रधान पण्डितों में हैं। आपने संप्रदाय
सिद्धान्तों पर कई ग्रन्थ लिखे हैं, जो अप्रकाशित हैं

२ पं० शोभालाल शास्त्रीजी। उदयपुर। खेद है, इ

सख्या नाम विशेष

आपका देहांत हो गया है। आप संस्कृत, हिन्दी और अँगरेजी के पूर्ण विद्वान् एव पुरातत्त्व विषय के गवेषणाकार और पूर्ण रहस्यज्ञ थे। इसी गुण से आप महाराणा उदयपुर के विक्टोरिया मेमोरियल में ऐतिहासिक खोज के सर्वेसर्वा नियुक्त किये गये थे। स्वभाव के बड़े सरल और मिलनसार थे। बर्लिन, लन्दन, आस्ट्रेलिया आदि के कई पुरातत्त्वज्ञों से आपका परिचय था। आप संस्कृत-हिन्दी दोनों में काव्य करते थे। कांकरोली आने पर आप अपनी काव्य-कृतियाँ बड़ी श्रद्धा से गो० श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोली को श्रवण कराते थे। आपकी अभिलाषा थी कि चित्तौड़-विषयक संस्कृत-काव्य 'वीरभूमि' श्रीमानों को समर्पित करते। पर वह इच्छा पूर्ण न हो सकी।

३ प० जटाशकर शास्त्रीजी। कांकरोली। शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के विद्वान् और व्याख्याता हैं। विद्या-विभाग के सचालक और सम्प्रदाय के प्रचारक हैं। सावली, बबई, बुरहानपुर तथा बाघोडिया के आर्य-समाजों से शास्त्रार्थ करने में आपने पूर्ण तत्परता से काम लिया था। आपकी संस्कृत की पूर्तियाँ उत्तम हैं। व्रजमण्डल युनिवर्सिटी

संख्या नाम विशेष

मथुरा ने आपको गत वर्ष "शुद्धाद्वैत भूषण" की उपाधि दी है। इस वर्ष अध्यक्ष महोदय ने आपको "व्याख्यानालंकार" की सन्मानोपाधि प्रदान की है। आप कांकरोली-नरेश के प्रधान पण्डितों में हैं।

४ प० कण्ठमणि शास्त्री विशारद। कांकरोली। आप प० बालकृष्ण शास्त्रीजी के सुपुत्र और शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के विद्वान् तथा व्याख्याता हैं। विद्या-विभाग कांकरोली के संचालक और कांकरोली-नरेश के प्रधान पण्डितों में हैं। आप संस्कृत तथा हिन्दी दोनों में काव्य-रचना करते हैं। आपने हिन्दी के समान संस्कृत में भी कवित्त आदि की रचना की है। बंबई, बुरहानपुर के आर्य-समाजों से शास्त्रार्थ में आपने पूर्ण तत्परता से कार्य किया था। आपको हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग से 'विशारद', संस्कृत-कॉलेज बनारस से 'वेदान्त शास्त्री' तथा सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष श्रीमहाराज कुमार दतिया के द्वारा 'महोपदेशक' उपाधि प्राप्त हुई है। व्रजमण्डल युनिवर्सिटी मथुरा ने गत वर्ष आपको शुद्धाद्वैत रत्न की उपाधि दी है। इस वर्ष अध्यक्ष महोदय ने आपको 'काव्यालंकार' की सन्मानोपाधि से विभूषित किया है। आपका

संख्या नाम विशेष

कविता में 'मणि' यह नाम है। कविमण्डल के आप मंत्री हैं।

५ पं० श्रीवर शास्त्रीजी चतुर्वेद। मथुरा। श्रीद्वारकेश संस्कृत-पाठशाला के प्रधानाध्यापक हैं। आप व्याकरण, न्याय, साहित्य तथा पुराणों के विद्वान् हैं। आपकी विद्वत्ता से संतुष्ट होकर अध्यक्ष महोदय ने आपको 'विद्यालंकार' की उपाधि प्रदान की है। आपको संस्कृत-समस्याओं की पूर्त्तियाँ हैं।

६ पं० नवनीतजी चतुर्वेद 'कविरत्न'। मथुरा। आप हिन्दी-कविता के उद्भट विद्वान् हैं। आपकी पूर्त्तियाँ इतनी सरल, सरस और सुन्दर तथा चुभती हुई होती हैं कि तद्विषयज्ञ उसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। आप प्राचीन कवियों में से एक प्रधान कविवर हैं। यद्यपि आजकल की चकाचौंध में आपकी जैसी चाहिए तैसी प्रसिद्धि नहीं हुई है तथापि साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा-जैसे हिन्दी के आचार्य 'पद्मपराग' में आपको बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से उल्लिखित करते हैं। यही सब कुछ है; आप पर नित्य लीलास्थ गो० श्रीबालकृष्णलालजी महाराज कांकरोली की बड़ी कृपा थी। आप-जैसे कवि-

संख्या नाम विशेष

वरों के सम्पर्क से ही उक्त महाराज श्री ने काशी-जैसे प्रसिद्ध स्थल में 'कवि-समाज' की स्थापना की थी। अतः सम्प्रति इस कविमण्डल के आप एक चूड़ारत्न हैं। आपको श्रीमानों ने 'कविता-कलाधर' की उपाधि से भूषित किया है। आपकी समस्या-पूर्तियाँ सहृदयाह्लादक हैं। तीन-चार ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी पूर्त्तियाँ सर्वोत्तम हैं।

७ रामाधीनलाल खरे। रीवाँ। आप रीवाँ-राज्य दरबार में फ़ारसी नवीस हैं। आपकी हिन्दी-कविता बड़ी भाव-पूर्ण और प्रभावशाली होती है। उदयपुर में एक समय अध्यक्ष महोदय को आपने "शिशुपाल वध" (माघ-काव्य) का पद्यानुवाद सुनाया था, जो वास्तव में एक अद्वितीय अनुवाद है। सुनने से अनुवाद में भी "माघे सन्ति त्रयो गुणाः" के अनुसार उपमा-सौष्ठव, अर्थ-गौरव और पदलालित्य तीनों का आनन्द आता है। यह ग्रंथ प्रकाशनीय है। आपको 'कविभूषण' की उपाधि प्रदान की गई है।

८ प० भट्ट श्रीबलदेव शर्मा 'प्रेम'। गोकुल। आप गोकुलस्थ भट्ट हैं। आपकी हिन्दी-समस्याओं की

संख्या	नाम	विशेष

पूर्तियाँ सरस, मधुर और प्रशसनीय होती हैं। आपने रचनाएँ साहित्य के अगों पर प्रधान लक्ष्य रखकर की हैं। नवीन भावों से आपका विरोध-सा झलकता है। आपको 'कविभूषण' की उपाधि प्रदान की गई है।

९ विहारीलालजी ब्रह्मभट्ट 'कविभूषण', कविराज, बिजावर। आप हिन्दी-कविता के अच्छे विद्वान् हैं। आप शीघ्रता में भी ऐसी अच्छी तात्कालिक पूर्त्ति करते हैं कि आपका लक्ष्य बराबर बैठता है। सम्प्रति आप बिजावर के राज्य कवि हैं। आपकी दो-तीन काव्य-कृतियाँ पुस्तकाकार प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

१० पं० गोपालराव शास्त्रीजी कांकरोली। आप महाराजा स्कूल कांकरोली के प्रधान पण्डित और पुराणों के ज्ञाता हैं। आपको ग्वालियर-राज्य से 'माफी' रूप से भूमि प्राप्त है। इँगलिश और सस्कृत के विद्वान् हैं। आपकी सस्कृत-कविता ललित होती है। आपको 'पुराणविशारद' की उपाधि से अलंकृत किया गया है।

११ प० परमानन्द शास्त्रीजी त्रिगुणायक मथुरा। आप श्री द्वा० स० पाठशाला के उपाध्यापक हैं। आपने उक्त पाठशाला से ही उत्तीर्ण होकर उपाधि प्राप्त की है।

संख्या	नाम	विशेष
		संस्कृत-साहित्य के आप मर्मज्ञ हैं। कविता आपकी सुन्दर होती है।
१२	नारायणलाल 'नरेन्द्र' वर्मा	विशारद। कांकरोली। आप विनोद-प्रिय और हिन्दी-साहित्य के कृतश्रम विद्वान् हैं। आपकी बोल-चाल की भाषा भी अनुप्रास की लड़ी से युक्त होती है। फिर कविता क्यों न हो? पहिले आप २-३ अधिवेशनों तक ब्रा० कविमण्डल के मंत्री-पद पर अधिष्ठित रहे, पर उसके कार्य से आपने अन्त में सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। आप 'स्वतन्त्रता' के उपासक होने के कारण किसी कार्य-भार से बद्ध होना नहीं चाहते। हैं मिलनसार—और विज्ञ तथा मनुष्य प्रकृति के ताड़नेवाले। आपकी कविता आगे चलकर अच्छा रूप धारण कर सकती है। आपको इस वर्ष 'काव्य-कोविद' की उपाधि प्रदान की गई है।
१३	किशनलालजी 'कृष्ण'	शतरंज-मास्टर। मथुरा। आप शतरंज के प्रसिद्ध खिलाड़ी और हिन्दी-कविता के पूर्ण प्रेमी तथा रचयिता हैं। आप नवनीतजी 'कविरत्न' के शिष्यों में से प्रधान हैं।
१४	गोविन्ददत्त चतुर्वेद	मथुरा। आप नवनीतजी के

सुपुत्र और हिन्दी-कविता के एक होनहार कवि हैं।

संख्या नाम विशेष

आप संस्कृत का भी अध्ययन करते हैं। रचना उत्तम है।

१५ पं० उमाशंकरजी द्विवेदी उदयपुर। आप 'पालीवाल प्रभा' के सम्पादक तथा कट्टर सुधारवादी हैं। आपकी राष्ट्रीयता से पूर्ण रुचि है। कविता जोरदार होती है।

१६ पं० विश्वनाथ चतुर्वेदी मथुरा। आप शास्त्री-परीक्षा में द्वा० सं० पाठशाला से उत्तीर्ण हुए हैं और संस्कृत के विद्वान् हैं।

१७ पं० सम्बलकिशोर शास्त्रीजी मथुरा। आप संस्कृत के विद्वान् हैं। आपका विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ।

१८ पं० नरहरि शास्त्रीजी बाँरा। आप बाँरा (कोटा) हाईस्कूल के हेड पंडित और पं० बालकृष्ण शास्त्रीजी के शिष्य हैं। शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के आप ज्ञाता भी हैं। संस्कृत-कविता के साथ कभी-कभी हिन्दी में भी आप कविता करते हैं।

१९ पं० गिरिधारी शास्त्रीजी नाथद्वारा। आप गोवर्धन संस्कृत-पाठशाला में तृतीयाध्यापक हैं। आपके पिता कोटा-राज्य के प्रधान ज्योतिषियों में थे। कथा-शक्ति आपकी सुन्दर है। संस्कृत में काव्य-रचना करते हैं।

२० पं० प्रयागीलालजी द्विवेदी टीकमगढ़। आप टीकमगढ़ संस्कृत-पाठशाला के प्रधानाध्यापक हैं।

संख्या	नाम	विशेष

२१ छन्नूलाल वर्मा 'व्रजेन्द्र' कांकरोली। आप महाराजा स्कूल में हेड मास्टर हैं। साहित्य-चर्चा और उसके प्रचार में आपका मनोयोग प्रशसनीय है। कविता सुन्दर होती है। आप एक उत्साही कार्यकर्ता और योग्य शिक्षक हैं। विद्या-विभाग कांकरोली के उप-संचालक पद का कार्य भी आप करते हैं। आपका कलाओं से बड़ा प्रेम है। और प्रत्येक कलाओं का यथाशक्ति आप प्रचार भी करते हैं। आपको इस वर्ष 'कला-कोविद' की उपाधि प्रदान की गई है।

२२ पो० पुरुषोत्तम शर्मा विशारद। नाथद्वारा। आपको हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से विशारद-उपाधि प्राप्त है। कविता की समालोचना और सगीत से आपको विशेष रुचि है। चित्र-कला में आप सिद्धहस्त हैं। गोवर्धन-हाईस्कूल में अध्यापक हैं।

२३ भोलाजी भण्डारी मथुरा
२४ लाला पुरुषोत्तमदास मथुरा
} हिन्दी-कविता इनकी सुंदर होती है। आपका विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ।

२५ पं० उपेन्द्रनाथजी राहीकर। कांकरोली। आप मन्त्र-तन्त्र-शास्त्र में अच्छा दखल रखते हैं, और स्थापत्य कला

संख्या नाम	अधिवेशन	भाषा	पृष्ठ
२२ कीजिये	सप्तम	हिन्दी	६३
२३. छत्र-छाया में	,,	,,	६६
२४. व्रजभूषणा	,,	संस्कृत	६९
२५ मङ्गलानि	,,	,,	७१
२६ हारी है	अष्टम	हिन्दी	७४
२७. विराजे हैं	,,	,,	७७
२८ पायात्	,,	संस्कृत	७९
२९ मेदपाट.	,,	,,	८०
३० माना है	नवम	हिन्दी	८१
३१ सुहावनो	,,	,,	८६
३२. राजते	,,	संस्कृत	९०
३३. श्रीशभक्ताः	,,	,,	९२
३४ आती है	दशम	हिन्दी	९५
३५ लावेंगे	,,	,,	९९
३६ अरविन्दम्	,,	संस्कृत	१०३
३७. विट्ठलेशः	,,	,,	१०५
३८. जायगी	एकादश	हिन्दी	१०७
३९ दीजिये	,,	,,	११०
४० वैजयन्ती	,,	संस्कृत	११३
४१. प्रपद्ये	,,	,,	११४
४२ अँखियान में	द्वादश	हिन्दी	११६
४३. शिशिर-वर्णन	,,	,,	१२०
४४ ,, ,,	,,	संस्कृत	१२४
४५ पातु व.	,,	,,	१२६

श्रीद्वारकेशो जयति

श्री० द्वा० कवि-मंडल, कांकरोली

प्रथमाधिवेशन

फा० शु० १०, सं० ८७, ता० २७-२-३१



(१) "साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल करयौ करै।"

(१)

श्रीपति पदारविन्द-प्रच्छालन नीर सिन्धु—
लै लै कमलासन, कमण्डल भरयौ करै॥
लोक-भय-शोकहारो, त्रिदिव प्रमोदकारो,
जोम तमतोम, रविमण्डल हरयौ करै॥
जौ लौं 'मनि' दुष्ट दैत्यदानव-दलन हेत—
आखण्डल पानि पवि-मण्डल धरयौ करै॥
तौ लौं द्वारकेशजू के राज में विराजमान,
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल करयौ करै" ॥१॥

(२)

भीषण दरिद्र, ताते नेक हू न पाते अन्न,
काव्य-रस दाख चाख, सचय करयौ करै ॥
मैले औ कुचैले परिधान ते लपेटे गात,
कविता की भेट अलकारन धरयौ करै ॥
छीन, बलहीन, 'मनि' देह पै न देत ध्यान,
देके प्रान मान भाषा विपति हरयौ करै ॥
स्वारथ-विहीन, परमारथ-विलीन धन्य,
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल करयौ करै" ॥२॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(३)

ज्ञान गुन गौरव गभीरता गिनाय चारु,
आरत सुभारत की आरति हरयौ करै ॥
भूतल के ही तल में शीतल सनेह भरि—
प्रेम अनुराग 'बीजमन्त्र, उचरयौ करै ॥
उन्नति को मूल धर्म-कर्म को पढ़ाय पाठ,
मानव-समाज बीच भावना भरयौ करै ॥
मेरी अभिलास खास हिय में हुलास भरी,
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल करयौ करै" ॥१॥

(४)

वीरता विनोदिता की तरल तरगन में,
रस ते विहीन हीन हिय को हर्यौ करै ॥
काव्य कल्पतरु की सुखतर सुछाह माहि,
जग के त्रिताप तप्त जीवन धर्यौ करै ॥
विद्या के विकास बीच वैभव विशाल पाय,
काल विकराल हू के दर्प को दर्यौ करै ॥
प्रीति की प्रतीति, नीति रीति को 'नरेन्द्र' राखि,
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल कर्यौ करै" ॥ २ ॥

'नरेन्द्र' विद्यार्थी

---

(५)

धन्य है भाग आज कविन के उदित भानु,
औगुन तिमिरगन, प्रकाशन हर्यौ करै ॥
पंडित अपंडित को कवि हू अकविन को,
ज्ञानी अज्ञानिन को तू ध्यान में धर्यौ करै ॥
जानि के समूह कवि दर्शन या मंडल में,
बढ्यौ मोद 'नाथ' सभा नित हू भर्यौ करै ॥

(४)

राजन के राज तुव राज व्रजभूषन जू,
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल कर्‍यौ करै ॥१॥
उपेन्द्र 'नाथ' शर्मा

---

(६)

साहित्य को सेवा से ही धर्म माहिं प्रीति होत,
कर्म को प्रबल इच्छा याते ही सर्‍यौ करै ॥
साहित्य ही की सेवा से लोक-परलोक बने,
विश्व मध्य याही ते सुशक्ति उपज्यौ करै ॥
साहित्य को गौरव ही दीखत जहान बीच,
याही की सुसेवा ते समुन्नति कर्‍यौ करै ॥
'नाथ' व्रजभूषण तुम्हारी छत्रछाया बीच—
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल कर्‍यो करै" ॥१॥
कृपाशंकर भट्ट

---

(२) कविः सर्वत्र पूज्यते ।

(७)

गृहे गृही धनो ग्रामे राजा राज्ये विशिष्यते ॥
गृही ग्रामे तथा राज्ये "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥१॥

(८)

सुस्थाने पादनिक्षेप्ता नवालंकारधारकः ॥
कविता कामिनी कान्तः "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥२॥

(९)

हविर्भुवि पविः स्वर्गे, रविर्दिवि, गविष्ठिराः* ॥
यस्मिन्गौः सुस्थिरम्मन्या ! "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥३॥

'मणि' शर्मा

---

(१०)

अर्थगौरवसंयुक्तः पदालंकारभूषितः ॥
कुत्र चित्पूज्यते राजा "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥१॥

(११)

किं गुरोर्नाम दैत्यानामाकाशः कुत्र विद्यते ॥
राजा किंक्रियते विप्रः ? "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥२॥

(१२)

आनन्दवाग्विनोदेन दुर्बुद्धिं सद्विचारतः ॥
कुर्वन्परिहरँल्लोके "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥३॥

---

* एते सर्वेगविष्ठिरा इति तात्पर्यम् ! एताद्या कवि पूज्यते इति ...
"स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणि भूजले—इति कोशा...
...र्थाः ।

(५)

राजन के राज तुव राज व्रजभूषन जू,
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल कर्यो करै ॥१॥

उपेन्द्र 'नाथ' शर्मा

---

(६)

साहित्य की सेवा से ही धर्म माहिं प्रीति होत,
कर्म की प्रबल इच्छा याते ही सर्यौ करै ॥
साहित्य ही की सेवा से लोक-परलोक बने,
विश्व मध्य याही ते सुशक्ति उपज्यौ करै ॥
साहित्य को गौरव ही दीखत जहान बीच,
याही की सुसेवा ते समुन्नति कर्यौ करै ॥
'नाथ' व्रजभूषण तुम्हारी छत्रछाया बीच—
"साहित्यिक सेवा कवि-मण्डल कर्यो करै" ॥१॥

कृपाशंकर भट्ट

---

(२) कविः सर्वत्र पूज्यते ।

(७)

गृहे गृही धनो ग्रामे राजा राज्ये विशिष्यते ॥
गृही ग्रामे तथा राज्ये "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥१॥

(८)

सुस्थाने पादनिक्षेप्ता नवालंकारधारकः ॥
कविता कामिनी कान्तः "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥२॥

(९)

हविर्भुवि पविः स्वर्गे, रविर्दिवि, गविष्ठिराः* ॥
यस्मिन्गौः सुस्थिरम्मन्या† "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥३॥

'मणि' शर्मा

---

(१०)

अर्थगौरवसंयुक्तः पदालंकारभूषितः ॥
कुत्र चित्पूज्यते राजा "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥१॥

(११)

किं गुरोर्नाम दैत्यानामाकाशः कुत्र विद्यते ॥
राजा किंक्रियते विप्रः ? "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥२॥

(१२)

आनन्दवाग्विनोदेन दुर्बुद्धिं सद्विचारतः ॥
कुर्वन्परिहरँल्लोके "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥३॥

---

* एते सर्वेगविष्ठिरा इति तात्पर्यम् । † एतादृशः कवि पूज्यते इति ।
"स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणि भूजले—इति कोशात्
गोशब्दार्थाः ।

(१३)

सदाचाररतो नित्य वाग्मी शूर. प्रबोधक· ॥
प्रत्युत्पन्नमतिर्लोके "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥४॥

(१४)

काव्यस्य मोक्षदातृत्वात् पारमार्थ्याद्विचारतः ॥
त्रैगुण्यान्मगलात्मत्वात् "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥५॥

भट्ट जटाशकर शास्त्री

---

(१५)

श्रीरामचरित ' काव्य जग्रन्थ मुनिसत्तम ॥
सञ्जातः कर्मणा तेन "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥१।

(१६)

सहृद्य हृदयाल्हादकारिणी तापहारिणी ॥
काव्यशक्ति· सदा यस्य "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥२॥

(१७)

प्रतिभाशालिकविता शक्तिपूरितमानसः ॥
वागुदेवता कृपापात्र "कविः सर्वत्र पूज्यते" ॥३॥

प० गोपालराव शास्त्री

द्वितीयाधिवेशन

चैत्र शु० १. सं० १६८८, ता० २०-३-३१

(३) "वृषभान-लली है"

(१८)

कारी रुचै कमरो इनको,
उत उज्ज्वल चीर की साड़ी भली है॥
गुञ्जन माल गरैं इनके,
उनके उर पै 'मनि' माल ढली है॥
प्रीति में रूप सरूप कहा?
गिरि घूमै यहै वह कुञ्ज गली है॥
कान्ह को रूप मनो अलि पुञ्जरु,
कुन्दकली "वृषभान-लली है" ॥१॥

---

(१९)

विलसे कटि के तट पीत पटा,
उत नील निचोल घटा अमली है॥

(८)

सिर मोरपखा, बनमाल लसे,
उत चंद्रिका, मोतिन की अवली है ॥
'मनि' भूलत डार कदम्बन को,
वह मूरति एक भई युगली है ॥
वृषभान ललीमय कान्ह भये,
भई कान्हमयी "वृषभान-लली है" ॥२॥
पो० 'मणि' शर्मा

---

(२०)

जोबन अंग अनंग भरी छबि,
सोह रही ससि-सो अमली है ॥
हेम हिंडोलनि भूलति मोहनि,
साथ लिये आलि की अवली है ॥
औचक दीठ परी टुक मो तन
चौंकि भजी द्रुत कुंज गली है ॥
ता दिन की छबि आंखनि भूलति,
भूलति ना "वृषभान-लली है" ॥१॥
'नरेंद्र' विद्यार्थी

---

(२१)

केश खुले बिखरे छवि देत,
　　कपोलन पै जिमि नागवली है॥
चंद मुखै कर कञ्ज धरै,
　　अरु भाल में कुंकुम विन्दु भली है॥
मत्त गयन्द-सी चाल चलै,
　　हँसिबो विकसी जनु कुंद कली है॥
मोहिनी और पतिव्रत नारि,
　　प्रतच्छ मनो "वृषभान-लली है"॥१॥
　　　　छन्नूलाल मास्टर 'व्रजेन्द्र'

---

(२२)

कृष्ण लिये सुबजावत है,
　　यमुना तट पै मधुरी मुरली है॥
आकुल होय गई हिय में,
　　व्रज लोग लुगाइन को अवली है॥
वा छवि को बरनौ मैं कहा,
　　नित आवत जावत कुंज गली है॥

एरी सखी मन मोहन को,
लखिवे घरते "वृषभान-लली है" ॥१॥

प० द्वारकादास पण्ड्या

---

(४) "नूतन वर्ष"

(२३)

आवहु नूतन वर्ष, प्रेम को पाठ पढ़ावहु।
विद्या बुद्धि विवेक विमल विज्ञान बढ़ावहु॥
गुन गभीरता धर्म-कर्म आदर्श प्रसारहु।
आवहु "नूतन वर्ष" हर्ष तन मन सरसावहु॥
हिय सरसावहु मोद बहु दरसावहु उत्कर्ष॥
बरसावहु वैभव विपुल आवहु "नूतन वर्ष" ॥१॥

(२४)

वर्ष नूतनवर्ष ! शुभागमन सञ्जातम्॥
ते दर्शनमधिगत मञ्जुल चिरमवदातम्॥
जनता पूर्वादर्शगामिनीं भव्यां प्रोणय॥
उन्नतिमखिलां देह्यवनतिं सत्वरमपनय॥

(११)

अपनय परवशतामिर्मा विहित हर्षसङ्कर्ष ?
सौभाग्य दिशभारते वर्षे "नूतन वर्ष ?" ॥२॥

'मणि' शर्मा

---

(२५)

भारतीय हिय लोक, धर्म आलोक प्रकासत ॥
रोग-शोक अघ-ओघ मोह माया तम नासत ॥
परहित रति हरि भक्ति सुधा को स्रोत बहावत ॥
श्री सुषमा सुख शान्ति कान्ति चहुँ ओर दिखावत ॥
वेद कथित आदेश को उन्नत कर आदर्श ॥
विजय-पताका कर लिये आवत "नूतन वर्ष" ॥१॥

(२६)

कर्म योग तप तेज त्याग को भाव बतावत ॥
सदाचार कुल-कान आत्म सन्मान सिखावत ॥
देवोपम सौजन्य जन्य सौहार्द बहावत ॥
लोक-कार्य रह भिन्न किन्तु मन एक करावत ॥
सत्य सनातन धर्म को फिर से कर उत्कर्ष ॥
मधुर मोद मुसकानमय, आवत ' नूतन वर्ष" ॥२॥

'नरेन्द्र' विद्यार्थी

---

(५) "वर्षाभिनन्दनम्"

(२७)

नन्दनन्दनवन्दारु मन्दार हर्षवर्षणम् ।
वन्दे वृन्दारकानन्द नव "वर्षाभिनन्दनम्" ॥१॥

(२८)

साम्प्रत भारते वर्षे स्वराज्यपदलब्धये ।
यतमानाज्जान सर्वान्यायाः "वर्षाभिनन्दनम्"॥२॥

(२९)

व्रजभूषण राजान श्रीमद्विट्ठल देशिकाः ।
रामकृष्णसमौ लोके ताभ्यां "वर्षाभिनन्दनम्"॥३॥

(३०)

अभ्यर्थ्यन्ते प्रभोः पादाः दीयन्ते निर्मलाशिषः ।
अचिरात्पुत्रजन्मास्तु नृत्या "वर्षाभिनन्दनम्"॥४॥

भट्ट जटाशकर शास्त्री

---

(३१)

शिखिभिर्निजकेकाभिः भेकैरश्रान्तनिःस्वनैः ।
कविभिःक्रियते काव्यैर्नव "वर्षाभिनन्दनम्" ॥१॥

(३२)

धर्मस्वाराज्य सप्राप्त्या सोल्लास जातगौरवः ।
भारतीयाः करिष्यन्ति नव "वर्षाभिनन्दनम्" ॥२॥

(३३)

स्वातिसीकरसंलग्नस्पृहाः सारंगपक्षिणः ॥
आसारेऽपि न कुर्वन्ति नून "वर्षाभिनन्दनम्" ॥३॥

'मणि' शर्मा

तृतीयाधिवेशन

वै० कृ० ८, सं० ८८, ता० १०-४-३१

(६) "नेन"

(३४)

मृदु मुसक्यानि चन्द वदन अनूप रूप,
अंग-अंग उठत तरंग छवि मैन फैन ॥
"नवनीत" कैधों ये रमा है कै उमा है भलो,
कैधौं यह ग्यारहौ* विभूति ही है रैन मैन ॥
दूर हो ते जाकी प्रीति प्रतिभा प्रकास होत,
वास होत हिय में अदेखे ना परत चैन ॥
अति अनियारे कजरारे करतूत वारे,
मीन मृग खंजन सरोज से सुघर "नैन" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

* 'एकादशोऽय भवतोऽवतार' के अनुसार ग्यारहवीं 'विभूति' मोहिनी।

(३५)

प्रेम प्रघटाय बिछुटाय बसे मथुरा में,
जबते, वियोगिनो को रच ना परत चैन ॥
तर्फत है रैन-दिन नीर बिन मीन जैसे,
तापै दुख न्यारो ऊधो तू भो आयो जोग दैन ॥
अब तो वा छलिया के फन्द में परे सो परै,
टरे नाहिं काहू भाँति सत्य यह भाखे वैन ॥
तरस मरेंगे ना भरेंगे रुचि और ठौर,
'कृष्ण' नदनन्दन के रूप रस प्यासे 'नैन' ॥१॥

किशन 'कृष्ण' लाल

---

(३६)

वृथा करहु श्रम साँवरे, साँची बात दुरै न ॥
कहत रात को बात सब, ये रतनारे "नैन" ॥१॥

प० शोभालालजी शास्त्री

---

(३७)

भ्रमर भुलाने मृग चपे, मीनन हिये न चैन ॥
खञ्जन खिसियाने फिरैं, लखि कजरारे "नैन" ॥१॥

लाला पुरुषोत्तमदास (उत्तम

---

(३८)

कुटिल केश, भृकुटी कुटिल, कुटिल अलक अरु सैन ॥
कुटिलन को सँग पाय के करत कुटिलता "नैन" ॥१॥

(३९)

पल किवार, साँकरि वरुनि, तारे तारे, दैन ॥
मो मन मूँदन को किया महल किये जुग "नैन" ॥२॥

'गोविन्द' चतुर्वेद

---

(४०)

भले दुरावहु अलिन सँग, ललन ! चलत निज रैन ॥
बिन पूँछे कह देत सब तुव वस नींदे "नैन" ॥१॥

(४१)

कलपावत, पावत न कल, देत लेत ना चैन ॥
फाँसत, फँसत सुरूप लखि, यह मदमाते "नैन" ॥२॥

'मनि' शर्मा

---

(४२)

मुँदे रहत दिन में सदा, भले खिलत लखि रैन ॥
प्यारे ! अद्भुत रावरे, अरुन कमल तुव "नैन" ॥१॥

(४४)

जिन नैननि हरि-छबि बसै, तेई साँचे नैन॥
यों भुजंग मुख पंख में कहत सुदीरघ "नैन" ॥२॥

'नरेंद्र' वर्मा

---

(७) "बधाई है ❀"

(४५)

चैत सुदी नौमी रामचन्द्र की जयन्ती तामे
सरस सुहावनो प्रभात सुखदाई है॥
'नवनीत' प्यारेलाल बाबा को जनम भयो।
मुदित मनोरथ की भइ चितचाई है॥
गावे गीत मंगल औ तोरन तनाव तने
नौबत बजत द्वार संग सहनाई है॥
भये नन्द उत्सव यहाँ औ वहाँ दोऊ जगे
विप्र पढ़ें वेद देत आनन्द "बधाई है" ॥१॥

कविरत्न 'नवनीत' जी

❀ यह समस्या श्रीविट्ठलनाथजी बावा साहब के पुत्र प्राक-ट्योत्सव पर दी गई थी चैत्र शु० ९, सं० १९८८।

(४६)

चार मुखवारो चारों वेद को सुनावत है
द्वारे आय इन्द्र रह्यो नौबत बजाई है ॥
सोने के कलश पच पल्लव करन लिये
दारा देवतान हू की मडली सिधाई है ॥
अप्छरा अनंत नृत्य करत अनद-भरी
भनै 'कवि कृष्ण' शोभा वरनी न जाई है ॥
मगल बधाये अति छाये देश-देशन में
सुनि बिट्ठलेश भोन लाल की "बधाई है" ॥१॥

किशन 'कृष्ण' लाल

---

(४७)

वल्लभ-कुल कुमुद कलाधर प्रगट भो
कैधों बालकृष्ण जू को पुण्य फलदाई है ॥
कैधों कांकरोली की जनता को विनोद सत्य
मूर्तिमान कैधों सुआनन्द सुखदाई है ॥
चैत्र कृष्ण आठें सुमध्य रात्र उच्छव अच्छ
बिट्ठलेशजू को कैधों रूप नव भाई है ॥
बाहर बधाई घर-घर में बधाई धाई
लालन के प्राकट की प्रकट "बधाई है" ॥१॥

पो० 'मणि' शर्मा

(४८)

सुनि बिट्ठलेशजू के प्रकटे ललाम राम
लोक बीच मोद-भरी सुखमा समाई है॥
मंगलमय गान होत गेह-गेह नारिन के
दुंदुभि-नगारे औ बजत सहनाई है॥
विहरि विमानन में वर्षावे विबुध पुष्प
सुखद शृंगार साजि सोभा जुरि आई है॥
लाल जू के लालन को बार-बार देखि-देखि
राधा देत माधव को सादर "बधाई है" ॥१॥

'नरेंद्र' वर्मा

---

(४९)

सम्वत सिद्धो बसु गृह चन्द।
चैत्र मास सित पक्ष अमन्द॥ १ ॥
नवमी तिथि भृगुवार पुनीत।
पुनर्वसुक नक्षत्र सुमीत ॥ २ ॥
अर्ध निशा प्रकटे ब्रजभूप।
श्रीकल्याण राम रस रूप॥ ३ ॥

(४६)

चार मुखवारो चारों वेद को सुनावत है
द्वारे आय इन्द्र रह्यो नौबत बजाई है ॥
सोने के कलश पच पल्लव करन लिये
दारा देवतान हू की मडली सिधाई है ॥
अप्छरा अनत नृत्य करत अनद-भरी
भनै 'कवि कृष्ण' शोभा बरनी न जाई है ॥
मंगल बधाये अति छाये देश-देशान में
सुनि बिट्ठलेश भोन लाल की "बधाई है" ॥१॥

किशन 'कृष्ण' लाल

---

(४७)

वल्लभ-कुल कुमुद कलाधर प्रगट भो
कैधों बालकृष्ण जू को पुण्य फलदाई है ॥
कैधों कांकरोली की जनता को विनोद सत्य
मूर्तिमान कैधों सुआनन्द सुखदाई है ॥
चैत्र कृष्ण आठे सुमध्य रात्र उच्छव अच्छ
बिट्ठलेशजू को कैधों रूप नव भाई है ॥
बाहर बधाई घर-घर में बधाई धाई
लालन के प्राकट की प्रकट "बधाई है" ॥१॥

पो० 'मणि' शाम

बाँधे हैं बंदनवार मंदिर महाल चढ़ि
अरु बाजे नकारे ये सुरीली सहनाई है॥
सुखद सनेह-भरि जनता-समूह तब
दौरि आय कहत बधाई है "बधाई है" ॥१॥

पन्नालाल पारिख

---

(८) "सवारी गन गौर की *"

(५२)

जैसो ही उजास रोशनी को चहुँ ओर छयो
तैसी ही सजावट सुहाई पौर-पौर की ॥
'नवनीत' प्यारे व्रजवारे मेदवार वारे
फौज गज अश्वन की अर्दा तौर तौर की ॥
फूली फुलवारी कांकरोली को गुलाब-बाड़ी
आवत है पौन जाँ रसालन के बौर की ॥
मन्दिर ते निकरि पुरन्दर सभा-सी ये
व्रजभूषणलाल की "सवारी गन गौर की" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीत चतुर्वेद

---

* गोस्वामि व्रजभूषणलालजी कांकरोली-नरेश की गन गौर की सवारी पर दी गई।

सबहि कहैं हरषाई है।
लालन जन्म "बधाई है" ॥ ४ ॥

गोपीलाल अवदीच्य

---

(५०)

पांखुरिन साजे द्वार मालती चमेलिन के
चारो ओर सरस बितान छवि छाई है ॥
फैलो चहुँ ओरन गुलाबन की गन्ध मन्द
धुन्धरित सौरभ समीर सुखदाई है ॥
मीठे शब्द कोकिल चकोर मोर शोर करे
स्वर्ग छिति छोरन अनन्द अधिकाई है ॥
आज ब्रजभूषण अनुज बिट्ठलेशजू के
लालन के प्राकट ते आनँद "बधाई है" ॥१॥

पण्ड्या मोहनलाल

---

(५१)

वार शुक्र अर्ध निसा चैत्र शुक्ल आठें द्यौस
उनीसौ अठासी शुभ साल सुखदाई है ॥
लालन को जन्म आज विट्ठलेश रामजू के
जन के कल्याण हेत प्रकटे गुसांई है ॥

लखिकै सुवेश अलकेश सकुचानो मन
कांकरोली-पति को "सवारी गन गौर की" ॥१॥

गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(५५)

कुंजर-तुरंग संग शोभित सुपाज साज
निकसी सवारी मंजु उपमा न जोर की ॥
मानव मुदित भू मे नभ में विबुध-वृन्द
करि करि बाँको झाँकी नृप-सिर-मोर की ॥
मन्दिर नगर बाग बिट्ठल विलास बीच
शोभा समिटि आई मानो सब ठौर की ॥
भूमि पै न भई, सुनी, देखो ना नरेंद्र ऐसी
जैसी कांकरोली की "सवारी गन गौर की" ॥१॥

'नरेंद्र' वर्मा

---

(६) "प्राणप्यारो है ✻"

(५६)

गालिब गुलाब आब देत हैं कपोल गोल
अलक मलिंदन की पंगति पसारी है ॥

✻ कई कवियों ने इसे "प्राणप्यारी" समझकर पूर्ति की है। उत्तम कविता होने के कारण हम उसे प्रकाशित करते हैं।

(५३)

पूरन प्रचण्ड मार्तण्ड, शशि-मण्डल की
 सुषमा बिलाय देत धूरि जन दौर की ॥
चूनरी हरोरी औ गुलाबी की निहार छटा
 बिगलित दर्प भई घटा घनघोर की ॥
फौज, बैंड, अश्व, गज ताम साम राजे जहाँ
 बग्घो और मोटर की चाल 'मनि' डोर की ॥
दीखी थी न दीखेगी न दीख पड़ती है कहीं
 जैसी कांकरोली की "सवारी गन गौर की" ॥१॥

'मणि' शर्मा

---

(५४)

बृहद सुवाद्यन ध्वनी है धूमधाम ही की
 जटित कनक छवि छत्र और चौर की ॥
भूधर से उद्धत मतग औ तुरग संग
 षड ऐश्वर्य युक्त सेना तौर-तौर की ॥
नचत नवीन अबलागन सु झूमर लै
 [illegible]

(५८)

लोचन कुरंगवारी कारी लटवारी बंक
भृकुटी कुटिलवारी चंद मुखवारी है॥
सारी जरतारी धारी भूषन विविधि भारी
चटक मटकवारी वर वयवारी है॥
उन्नत उरोजवारी मैन रस चोजवारी
भारी श्रोनिवारी कटिवार-सी सुधारी है॥
केल-सम जंघवारी पुण्डरीक-पदवारी
ऐसी यह 'गोविंद' हमारी "प्राणप्यारी है" ॥१॥

गोविंददत्त चतुर्वेद

---

(५९)

जमना के कूल रास रस को रचनवारो
कुंचित कचनवारो कारो तनुवारो है॥
चंचल चखनवारो माखन चखनवारो
मोर के पखनवारो लोक रखवारो है॥
कीर्तिजा वरनवारो चीर को हरनवारो
पीर को हरन वारो पीतपटवारो है॥

'नवनीत प्यारे' पुण्डरीक से नुकीले नैन
बिम्ब से अधर दन्त दाड़िम विदारी है॥
चिबुक रसाल औ सनाल कञ्ज बाहु सोहै
श्रीफल उरोज पान उदर सुधारी है॥
केल जंघवारी सींच जोवन सम्हारो ऐसी
मैन फुलवारी-सी हमारी "प्राणप्यारी है" ॥१॥
कविरत्न नवनीत चतुर्वेद

---

(५७)

लाज को न आज काज शील पै सुशील धर्यो
मिट्टीमान, गौरव को गोबर कर डारो है॥
सीख को मँगाई भीख लीक पै चढाई पीक
आपनो परायो 'मनि' नास उर धारो है॥
एरी बीर ! मेरी पीर कौन ते कहूँ ना धीर
नैनन में नीर, तीर हिय में विथारो है॥
कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहो
मैं तो श्याम कारो निरधारो "प्राणप्यारो है" ॥१॥
'मणि' शर्मा

---

(५८)

लोचन कुरंगवारी कारी लटवारी वक
भृकुटो कुटिलवारी चंद मुखवारी है॥
सारी जरतारी धारी भूषन विविधि भारी
चटक मटकवारी वर वयवारी है॥
उन्नत उरोजवारी मैन रस चोजवारी
भारी श्रोविवारी कटिवार-सी सुधारी है॥
केल-सम जघवारी पुण्डरीक-पदवारी
ऐसी यह 'गोविंद' हमारी "प्राणप्यारी है" ॥१॥

गोविंददत्त चतुर्वेद

---

(५९)

जमना के कूल रास रस को रचनवारो
कुंचित कचनवारो कारो तनुवारो है॥
चंचल चखनवारो माखन चखनवारो
मोर के पखनवारो लोक रखवारो है॥
कीर्तिजा वरनवारो चीर को हरनवारो
पीर को हरन वारो पीतपटवारो है॥

दानव दमनवारो दारिंद दरनवारो
ब्रज रखवारो सो हमारो "प्राणप्यारो है" ॥१॥
'नरेंद्र' वर्मा

---

(६०)

छोड़ निरदई गयो मथुरा अक्रूर सग
वहाँ जाय प्रेम प्रीति पाछलो बिसारी है ॥
भेजत भयो है जोग उद्धव तिहारे हाथ
कैसे उर आवे साँच 'कृष्ण' ब्रह्मचारी है ॥
शरद उजारी वृन्दा बिपिन मझारी रास
रच्यौ हम नारी सग बाँह गल डारी है ॥
अभूँ गिरिधारी भरे औगुन अपारी भारी
कूबरी कलंकिन को कीनो "प्राणप्यारी है" ॥१॥
किशनलाल 'कृष्ण'

(६१)

संकट हरनवारो कंज से चरनवारो
उतम वरनवारो नद को दुलारो है ॥
मोर के मुकुटवारो धरे भेस नटवारो
छुटे लोल लटवारो बृज रखवारो है ॥

चंद्रिका चटक वारो छवि की लटक वारो
पीत बसनवारो 'तुलसी' उर धारो है ॥
लोचन विसाल वारो उर बन मालवारो
मोहन वेनुधारो हमारो "प्राणप्यारो है ॥ १ ॥

सु० तुलसीदास

---

(१०) स कथ्यते

(६२)

न यस्य भालं लसदूर्ध्वं पुण्ड्रकम्
दृषद्वहीरमा मनुजः स कथ्यते ।
मालागले सत्तुलसीमणी भवा
न यस्य शालो जनुषा स कथ्यते ॥ १ ॥

(६३)

सुसेवितं कृष्णतदीयपादयो-
र्न येन युग्म मृतकः स कथ्यते ।
कृष्णांघ्रियुग्मे न च येन नामितं
शिरः कबंधो मनुजः स कथ्यते ॥ २ ॥

(६४)

समर्पितं येन जगत्प्रिये श्रियः
पत्यौ तदीयं सकलं न सौहृदात् ।

निष्किञ्चनानां सुहृदो हरेः प्रियः
सकिञ्चनत्वान्न बुधैः स कथ्यते ॥ ३ ॥

बधाई है

(६५)

बधाईहे नर्मा मदकलगजेन्द्रोपम ! गृहे
स्थिरेत्येनं मत्तद्विरदचलकर्णान्तचपला ।
इय स्पृष्ट्वा पादौ हृदयमुपमाक्रम्य च हरेः
मृजत्युच्चैर्मोऽह स्वपिति फणिभोगेऽपि हृतदृग् ॥ १ ॥

प्राणप्यारो

(६६)

अरिप्राणप्यारो ह्यति गदया दक्षिणशयो
मुरारेर्भोगीन्द्रप्रतिभटरुचिं वाम उचिताम् ।
करे भाति प्रोद्यद्रविनियुतहासोऽप्यरिवरः
स्वभक्तान्गोपायत्यधिकरयुगात्ताम्बुजभृतः—१—

नैन

(६७)

नैन इहास्ति गृहीतगिरीणाम्
भक्तिमतां श्रितपादहरीणाम् ।
ज्ञानरविद्युत चित्तदरीणाम्
सौति कथ तमसोऽप्यनरीणाम् ॥ १ ॥

पो० बालकृष्ण शास्त्री

---

(६८)

वेदोऽखिलो धर्ममूलं गीताब्रह्मसूत्राण्यपि
श्रीमद्भागवतञ्च प्रमाणमवगम्यते ॥ १ ॥
श्रीकृष्णाख्य पर ब्रह्म जीवाश्चांशभूतास्तस्य·
शरणाप्तिर्यत्र मुख्य साधनं विशिष्यते ।
सेवापुरुषार्थस्तथा सत्यता प्रपञ्चस्यास्ति
मोहात्मकः संसारोऽविद्याबद्धोऽवबुध्यते
इत्थभूतलक्षणो विचक्षणचयेन नुतो
वल्लभार्य कथितो भक्तिमार्गः स कथ्यते ॥ १ ॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

निष्किञ्चनानां सुहृदो हरेः प्रियः
सकिञ्चनत्वान्न बुधैः स कथ्यते ॥ ३ ॥

बधाई है

(६५)

बधाईहे नर्मा मदकलगजेन्द्रोपम ! गृहे
स्थिरेत्येनं मत्तद्विरदचलकर्णान्तचपला ।
इय स्पृष्टा पादौ हृदयभुवमाक्रम्य च हरेः
मृजत्युच्चैर्मोऽहं स्वपिति फणिभोगेऽपि हृतदृग् ॥ १ ॥

प्राणप्यारो

(६६)

अरिप्राणप्यारो हयति गदया दक्षिणशयो
मुरारेर्भोगीन्द्रप्रतिभटरुचिं वाम चर्चिताम् ।
करे भाति प्रोद्यद्रविनियुतहासोऽप्यरिवरः
स्वभक्तान्गोपायत्यधिकरयुगाम्राम्बुजभृतः—१—

नैन

(६७)

नैन इहास्ति गृहीतगिरीणाम्
भक्तिमतां शिवपादहरीणाम् ।
ज्ञानरविद्युत चित्तदरीणाम्
सौति कथं तमसोऽप्यनरीणाम् ॥ १ ॥

पो० बालकृष्ण शास्त्री

---

(६८)

वेदोऽखिलो धर्ममूलं गीताब्रह्मसूत्राण्यपि
श्रीमद्भागवतञ्च प्रमाणमवगम्यते ॥ १ ॥
श्रीकृष्णाख्य पर ब्रह्म जीवाश्चांशभूतास्तस्य-
शरणाप्तिर्यत्र मुख्य साधनं विशिष्यते ।
सेवापुरुषार्थस्तथा सत्यता प्रपञ्चस्यास्ति
मोहात्मकः ससारोऽविद्यावद्धोऽवबुध्यते
इत्थभूतलक्षणो विचक्षणचयेन नुतो
वल्लभार्य कथितो भक्तिमार्गः स कथ्यते ॥ १ ॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(६९)

धर्मग्रन्थमविज्ञाय तथा सच्छास्त्रसङ्गतिम् ।
जानाम्यहं जगत्सर्वं गान्धिमार्गः स कथ्यते ॥ १ ॥

(७०)

म्लेच्छचाण्डालजैः साकं वर्णिभिर्यत्र भुज्यते ।
उच्चनीचक्रमो नास्ति गान्धिमार्गः स कथ्यते ॥ २ ॥

(७१)

पति पत्नी गुरु शिष्यः ईश भृत्यो नृप प्रजा ।
गणयन्ति न वै यत्र साम्यवादः स कथ्यते ॥ ३ ॥

(७२)

पातिव्रत्यपरत्वञ्च सदाचारपुरःसरम् ।
अनन्यपूर्वता यत्र पत्नीधर्मः स कथ्यते ॥४ ॥

भट्ट जटाशङ्कर शास्त्री

---

(७३)

निवृत्तकामोऽपि हरेर्मुखाम्बुजावलोकनायोत्कलिका कुलान्तरः
बहिः प्रमत्तोऽपि समाहितोऽन्तरे महामना भागवतः स कथ्यते ।१।

प० शोभालाल शास्त्री

---

(७४)

स्वशेमुषी बलाद्यस्तु वादिपर्वतपञ्चकम् ।
वाचो युक्तिपविर्भिन्द्यात् पण्डितेन्द्रः स कथ्यते ॥ १ ॥

प० श्रीवर शास्त्री चतुर्वेदी

---

(७५)

यत्सङ्गति समासाद्य बालिशः कुशली भवेत्
मलयाद्रेर्यथा वृक्षाः साधुसङ्गः स कथ्यते ॥ १ ॥

परमानन्द शास्त्री

---

(७६)

शृङ्गारादिरसैर्युक्तां पदलालित्यभूषिताम् ।
कवितां श्रावयति यः कविश्रेष्ठः स कथ्यते ॥ १ ॥

(७७)

कः कथ्यते बुद्धिमतां वरिष्ठः प्रेष्ठः प्रियाणां बलिनां बलिष्ठः ।-
करोति यो बुद्धिबलेन कार्यं स्वरूपवान्गोविजयी स कथ्यते ॥ २ ॥

गिरिधारी शास्त्री

---

(७८)

राजनीतिरहस्यज्ञः प्रजापालनपण्डितः ।
धनुर्वेदविदां श्रेष्ठः पुमान्राजा स कथ्यते ॥ १ ॥

(७९)

राष्ट्रकार्येषु कुशलः स्वामिचित्तापकर्षकः ।
आयव्ययानुसारी यः राजमन्त्री स कथ्यते ॥ २ ॥

भट्ट गोपालराव शास्त्री

---

(८०)

लोकोपकृतये जह्यादसूनप्यविचारयन् ।
याचकेप्सितदाता यः त्यागवीरः स कथ्यते ॥ १ ॥

(८१)

सतां त्राणाय मानाय विनाशाय सुरद्विषाम् ।
वितनोत्यात्मशक्तिं यः कर्मवीरः स कथ्यते ॥ २ ॥

विश्वनाथ चतुर्वेद

---

(८२)

काव्यशास्त्रविनोदन्तु यः करोति दिने दिने ।
विद्याप्रदानचतुरो विद्वद्वर्यः स कथ्यते ॥ ३ ॥

छोगालाल शर्मा

चतुर्थाधिवेशन

वै० शु० ५, सं० ८८, ता० २३-४-३१

(११) "श्याम"

(८३)

पतझर कीने बन-बाग या बसन्त ही ने
ताहू पै जरायैं देत ग्रीषम को घोर घाम ॥
'नवनीत प्यारे' अब बरषा समीप आई
फेर उलहेंगे नव लता द्रुम धाम-धाम ॥
चारों ओर छाय घिरि आये हैं घटान लेके
भयो विसवास खास बीजुरी रहै न छाम ॥
सरस सँजोगी बनितान के विनोद काज
देख सखि, देख अब आय गए घन "श्याम" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीत चतुर्वेद

---

(८४)

यह न चचला, पीतपट, नहिं बर्क, मुक्तादाम ॥
यह न इन्द्र-धनु, मोर-पंख, यह न मेघ घन "श्याम" ॥१॥

(८५)

राधा-मुख विकसित कमल, सरस गन्ध अभिराम ॥
मधुर अधर मकरन्द को, लोलुप अलि घन"श्याम" ॥२॥

'मणि' शर्मा

---

(८६)

छाय रहीं लता पता सघन हरियाली लिये
दरसंत है नाहिं जहाँ रवि हू को नेक घाम ॥
फूले फूल फूलन के घमला अनेक भाँति
अति ही सुगन्ध भरे शोभित हैं चहूँ ठाम ॥
छूटत फुहारे भारे अरक गुलाबन के
मीठे सुर बाज छेड़ गावत सखी ललाम ॥
देख चल एरी देरो कीजै नहिं रच भट्ट,
खस बँगलान में बिराजे आज राधे"श्याम" ॥१॥

किशन'कृष्ण'लाल

---

(८७)

भीषम भीषम बीतिगो, घिरी घटा नभ श्याम ॥
एरी सखि ! अबलों न वह, आये श्रीघन"श्याम" ॥१॥

छन्नूलाल वर्मा 'व्रजेन्द्र'

(८८)

धूप दुपहर की हरै है गति मति जाति
पति है प्रदेस तातें मन को मरोरै काम ॥
'गोविंद पियारे' लगैं लूएँ ये तपन भरीं
बरी विरहाग आग तरसत आठों जाम ॥
अजिर हमारे में रसाल की सघन छाँह
सीतल समीर तल ताके में करो बिराम ॥
खस-टटियाँ हैं औ, बरफ-पटियाँ हैं परी
परस पयोधर अराम देखो घन "श्याम" ॥१॥

गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(८९)

जिनके ललित कपोल कलित कुंडल मन भावें ॥
औं लट कुटिल सरोज नैन विरहा उपजावें ॥
परसत अंग सुरग सग मिल रास रचाती ॥
ऐसी कोटिन केलि सुरति कर बिदरत छाती ॥
इन नैनन छबि पेखती, गोधन सँग बलराम ॥
उन नैनन अब देख रे ! रथ चढ़ि जावत "श्याम" ॥ १ ॥

दामोदर

पीछे ये प्रतापी रणजीतसिंह काना भयो
पैजो हो प्रताप महा"राना मेद पाट को" ॥११॥

'गोविन्द'दत्त चतुर्वेद

---

(१४)

कीरति अखण्ड जाकी छाय रही देशन में
दूसरो दिखात नाहीं ऐसो कोई ठाट को ॥
घोर समाम जिन कीनो शाह अकबर से
कविन बखानो जुद्ध हल्दी के घाट को ॥
राख लीनी हिन्दुन की हद यह 'कृष्ण' भने
खण्ड करि दीनों मान दिल्ली समराट को ॥
छत्रीकुल वाना धर्म नीति को निभाना ज्ञाना
अति बलवाना महा"राना मेद पाट को" ॥१॥

किशन'कृष्ण'लाल

विद्या को विभाकर, उजागर जहान बीच
प्रभाकर सो तेज-पुंज हिन्दू समराट को ॥

पालक प्रजाजन को गाहक गुनीजन को
घाले हिंस्र शत्रुन को रूप घबराट को ॥
धीरज धरा सम समता न्याय रचा पेखि
अजा-सिंह पीवे जल दोऊ एक घाट को ॥
धर्म-कर्म आकर रत्नाकर दयालुता को
भारत को भानु एक "राना मेद पाट को" ॥१॥

छन्नूलाल वर्मा 'ब्रजेन्द्र'

---

(१३) "श्याम"

(१६)

कृष्ण त्वदीयपदपङ्कजपरागराग-
मन्तरा समन्ततो न विरतिमुपैमि नाम ॥
दर्शनाभिलाषेऽस्मिन्नयनप्रणालिकया
शश्वदश्रुधारा याति दयित ! रमाभिराम !
जडीभूत हस्तपादोऽनीशः कार्यं जातेऽहं
रसना त्वदीयं किञ्च रटति ललाम नाम ॥
मनो मंदिरे त्वं मे विहर सुखेन सखे
त्वरितमुपेहि देहि दर्शनं पयोदश्याम ॥१॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(९७)

वेणु नादय मा विभो
प्रियतम जगदभिराम ॥
यदि वादय सुरमोहिनी
मां नय रासे श्याम ॥१॥

भट्ट जटाशंकर शास्त्री

---

(१४) "प्रतिपर्वरसोदयः"

(९८)

सर्गादिदशलीलासु कृष्णभक्तिनिरूपणैः ।
श्रीमद्भागवते शास्त्रे प्रतिपर्वरसोदयः ॥१॥

(९९)

माधुर्यात्पित्तनाशाच्च स्वादात्पुष्टिप्रवर्धनात् ।
इक्षुदण्डे समग्रेऽपि प्रतिपर्वरसोदयः ॥२॥

भट्ट जटाशंकर शास्त्री

---

(१००)

धन्या काऽन्यकुटी काऽपि यापि नद्धा कवीन्दुभिः ।
यत्राऽस्ति सेव्यमानायां प्रतिपर्वरसोदयः ॥१॥

पं० श्रीवर शास्त्री

---

(१०१)

अद्यापि भारते वर्षे प्रबला सुरभारती।
वर्तते कविकाव्यानां प्रतिपर्वरसोदयः ॥ १ ॥

परमानन्द शास्त्री

---

(१०२)

कृष्णद्वैपायनकृतौ कल्पायां वाचि भारते।
प्रत्यक्ष्यायं प्रतिश्लोक प्रतिपर्वरसोदयः ॥ १ ॥

(१०३)

वाल्मीकेर्व्यासदेवस्य कालिदासकवेः कृतौ।
पश्यामः पदलालित्यं प्रतिपर्वरसोदयः ॥ २ ॥

प्रो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(१५) "रामराज्यम्"

(१०४)

विद्याबुद्धिप्रभावस्त्रिदशपतिरतिस्त्यागवृत्तिः क्षमा श्रीः
शास्त्रे निष्ठा प्रतिष्ठा निखिलजनमनस्तोषसम्पोषभावः।
नीरक्षीरप्रभेदप्रकटितजनता शासन धर्मवृत्तिः
भूयाच्छ्रीकाङ्करोल्यामखिलगुणगणैः सुन्दरं "रामराज्यम्" ॥१॥

प्रो० कण्ठमणि शास्त्री

(१०५)

अस्मद्देशे द्विजानां विलसति परमो धर्म आबालवृद्धे
न्यायस्सर्वप्रजासु प्रमदजनगणो मर्यते राजदण्डात् ।
धेनूनां पालनोत्काः प्रमुदितमनसः क्षत्रिया सन्त्यनेके
भूपे भूपालसंज्ञे प्रभवति सकल वर्तते "रामराज्यम्" ॥ १ ॥

भट्ट जटाशंकर शास्त्री

---

(१०६)

धन्य यशस्यमनघ गुणिलोकजुष्टम्
यन्मेदपाटविषये च्चललाभमूतम् ।
तत्काङ्करोति भणिति प्रथित रसायां
घोरे कलावपि विराजति "रामराज्यम्" ॥ १ ॥

प० श्रीवर शास्त्री

पञ्चमाधिवेशन

ज्ये० शु० १, सं० ८८, ता० १८-५-३१

(१६) "अधीर है"

(१०७)

नवनीत निकासि धर्‌यो हि रह्यो
न लियो कछु दूध न भात दही रहे ॥
व्रज ग्वालन-बालन संग चरावन
धेनु गयो 'मनि' या नद वीर है ॥
मनमोहन आयो नहीं अब लों
भई साँझ, भयो मन खिन्न गंभीर है ॥
जसुदा बसुधा तल देखति सोचति
कान्ह बिना अति होत "अधीर है" ॥१॥

(१०८)

सिर मोर-पखा, गल गुंजन-माल
लसे, कटि नूतन पीत सुचीर है ॥
कर में लकुटी, लिपटी तन में

ब्रज-रेनु, चरावत धेनु अहीर है ॥
जगमोहन रूप त्रिभङ्ग किए
मृदु बेनु बजावत कुंज कुटीर है ॥
मुनि दुर्लभ सोई निहारिवे को
'मनि' क्यों मन होत न तेरो "अधोर है" ॥२॥

(१०९)

सत्य धर्म कर्म दया धीरता दिखाती नहीं
वीरता विदेश गई, जनता फकीर है ॥
न्याय नीति शिक्षा की न भिक्षा माँगने से मिले
केवल कानून की ही पिटती लकीर है ॥
ज्ञान, कला-कौशल की बात पूछता है कौन ?
खाने को न अन्न और कटि में न चीर है ॥
पूर्ण परतन्त्रता का देखो फल चाखो इसे
स्वर्गोपम भारत हा !! गारत "अधीर है" ॥३॥

'मणि' शर्मा

---

(११०)

सूखे सुख शान्ति सुधा सूक्ति के सरोज सबै
मधुप मनोषिन को दीसत न भीर है ॥

धर्म-कर्म तरु पुण्य पल्लव झुलसि गये
नास्यो भक्ति-भाव भर्‍यो नेम व्रत नीर है ॥
एहो मनमोहन ! मन मोह न तिहारे नेक
हाय हीन हालत पै होवत न पीर है ॥
पूर्ण परतन्त्र की दोरघ दवानल तें
देखो, देश, देव, वन आकुल "अधीर है" ॥१ ॥

(१११)

जो पै वियोग-सिन्धु बूड़ति है, बूड़न दे
जलतो वियोग-ज्वाल यही तदबीर है ॥
डरती है डरने दे कोकिल का शब्द सुन
शूल हूल देवे, भले त्रिविध समीर है ॥
चौंकती है चन्द्रमुखी यदि तेरी चन्द्रमा से
चौंकने दे चपने दे फूटी तकदीर है ॥
मरती है मरने दे ऐसी कुवियोगिनी को
ऐरे निठल्ले ! तू क्यों होता "अधीर है" ॥२॥

'नरेन्द्र' वर्मा

---

(११२)

संस्कृत-भाषा देश-भाषा हू को न पायो पद
भई देव-भाषा जाको विषय गभीर है ॥

पालो को न चालो मतवालो गति प्राकृति को
बात है निराली जाको उड़त समीर है॥
फारसो लजावे देख आरसी कलौ हो मुख
देख-देख वैभव भई उदू फकोर है॥
हिन्द राष्ट्र भाषा देव नागरी विलोक लोक
शोक-भरी होत अब इँग्लिश "अधीर है"॥१॥

प्रो० पुरुषोत्तम शर्मा

---

(१७) "नागरी"

(११३)

जैसो नव्य भव्य भाव उत्तम उचार तैसो
देख लेख शैली शुद्ध गुन गन आगरी॥
सुंदर सुडोल मुक्तादाम-से निकाम अच्छ
अच्छर विलच्छ परिपूरन उजागरी॥
सुषमा निहारि जाकी उपमा न अन्य होत
धन्य 'मनि' लिपि-गन-जननी सुखाकरी॥
जेवो देश-भाषा तेती लिपिहू अपूरन हैं
जैसी देव-भाषा तैसी दीपे देव "नागरी" ॥ १ ॥

(११४)

अस्त भये दिननाथ, उगे निसिनाथ
न रैन न होत विभाकरी ॥
धर्म। विवेक मितव्ययता विनसे
कमला कह होत सुखाकरी ॥
यौवन शासन द्रव्य कुसंग मिले
'मनि' आश न, कीर्ति उजागरी ॥
वृद्ध कुरूप मिले पति रुग्ण
सुभाग्य से होय पतिव्रत "नागरी" ॥२॥
'मणि' शर्मा

---

(११५)

विशद विशाल भाव गौरव गभीरता सों
विलसि विशेष रहो गुनिजन पागरी ॥
लखिकें विनाश आश सींचत विकार-भरी
डारत अनेक मूल दोष विष गागरी ॥
विधिना बनाई ताते विधि ना बनाई कछु
राजत त्रिलोक नित्त 'उत्तम' उजागरी ॥

बाँके से उपाय कर थाके ये विदेशी जन
नागरी सो ना गिरी है धन्य देव "नागरी" ॥१॥
पो० पुरुषोत्तम शर्मा

---

(११६)

शुद्ध है सरल औ, सुन्दर सुख देनवारी
ज्ञान को प्रकाश दिव्य देत है कृपाकरी ॥
ब्रह्म सों मिलाय देत देर ना करत नेक
वेदन को भेद खोल देत है गुणाकरी ॥
भाषा है इतर अन्य तारिका समान जान
विधु-सी विराज रही साहित-विभावरी ॥
वन्दित सुरेंद्र शम्भु विधिना 'नरेंद्र' हू की
ऐसी है हमारो भव्य भाषा नव "नागरी" ॥१॥
'नरेंद्र' वर्मा

---

(११७)

श्रीवृन्दावन मजु कुज यमुना तट राजें ॥
चन्दन अतर गुलाब नीर सीतल सुख साजें ॥
चलत फुवारे विविध रग रस बरसत सुन्दर ॥
शोभित श्रीब्रजराज कुँवर नवरसिक पुरन्दर ॥

ललितादिक गावत सरस, मधुर मनोहर राग री ॥
विहरत नित गोविंदयुत, श्रीराधा नव "नागरी" ॥१॥

गोपीलाल अवदीच्य

---

(१८) "पुत्रोद्भवः"

(११८)

भक्तिः श्रीरमणे प्रभुत्वमचलं निर्दूषणं भूषणम्
प्राज्यं राज्यमहो क्षमा त्वयि मतिः श्रीविट्ठलेश प्रभो !
सौजन्यं स्थिरसम्पदस्ति भविकं भव्याभिनव्याकृतिः
तत्सर्वं फलमस्ति पूर्वतपसां तत्रापि "पुत्रोद्भवः"॥१॥

पो० 'मणि' शर्मा

षष्ठाधिवेशन

आषाढ कृ० ८, सं० ८८, ता० ८-६-३१

(१६) "अधर धरो रहै"

(११९)

याकी नामधारी एक मोनन बिनास करै
डरै ना कछूक अभिमान में भरा रहै ॥
'नवनीत' दूजी ये कसाइन है गोकुल में
वृज वनितान ही के खोजन परी रहै ॥
सुनत ही धामै बिसरामे काम-काज वीर !
धीर ना धरात प्रान मिलन घरी रहै ॥
भूलै नहिं याकौ औ' बिसारै नाहिं एको पल
आठों जाम श्याम ही के "अधर धरी रहै" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(१२०)

कोऊ स्नान करिके कलिन्द नन्दिनी के तीर
वसन-विहीन चारु चित्र-सी खरी रहै ॥

(५१)

कनकघरी-सी पुतरी-सी हाय कोऊ बाल
चढ़िके अटा पै खुले अंगनि अरी रहै ॥
चेतना हरी-सी कैधों निपट मरी-सी ह्वैके
शिथिल शरीर कोऊ सेज पै परी रहै ॥
कुशल कहाँ है तौलों ओला बड़भागिन ये
मुरली गुपाल जू के "अधर घरी रहै" ॥१॥
पं० शोभालाल शास्त्री

---

(१२१)

सीप कुल तारयौ तात सागर उघारयौ, स्वाँति
जनम सुधारयौ भूरि भावन भरी रहै ॥
जौन भाग भारो त्रिपुरारी तपघारी चहैं
कहत 'बिहारी' तौन फलन फरी रहै ॥
मोहन की प्यारी तो बुलाक बलिहारी जाऊँ
धन्य ये तिहारो पूर्व पुण्य की घरी रहै ॥
चंद्र-सो वदन तामें बिम्ब से अधर तोन
अधर पै चीन, तापै "अधर घरी रहै" ॥१॥
कविभूषण पं० 'बिहारी'लाल भट्ट

---

(१२२)

प्यारी, तुव आनन में चन्द्-सी लुनाई लसै
कुन्तल कलाप कुद कुसुम लरी रहै ॥
दंत-दुति दाड़िम-सी दीपे कमनीय 'मनि'
विमल विशाल भाल कुंकुम करी रहै ॥
नैन रतनारे मतवारे कजरारे बीच
बंकिमा विलोकन की मधुर भरी रहै ॥
गोल गोल मृदुल कपोलन पै लालिमा हू
मन्द मुसक्यान तेरे "अधर धरी रहै" ॥१॥

(१२३)

एल्लो माई लार्ड कृष्ण ! छोड़ ओल्ड फैशन तू
अलक कटा दे कट इंग्लिश खरी रहै ॥
पीताम्बर छोड़ हैट कोट पतलून चढ़ा
बूट, रिस्टवाच, हाथ पतली छरी रहै ॥
पढ़ इँगरेजी फ्रांस देश में सुर्डेस कर
डेड लैंगवेज-गीता भारत डरी रहै ॥
पूरा थैंक्स होगा तुझे वशी के ठिकाने जब
जलती सिगार तेरे "अधर धरी रहै" ॥२॥

पो० 'मणि' शर्मा

(१२४)

पीवत पियूष रस रुचिसों रहत नित
आनँद मगन उतसाह में भरी रहै ॥
सोवत नहीं है छिन औरें नाहिं सोवन देत
बेकल करत प्रान सुधि बिसरी रहै ॥
दीनो है छुड़ाय घर-बार सब याने बीर,
मानत नहीं है जिद दूनी पकरी रहै ॥
'कृष्ण' नंद-नदन के निशि दिन आठों जाम
बाँसुरी निगोड़ी यह "अधर धरी रहै" ॥१॥
किशनलाल

---

(१२५)

आनन सलौने पै लुनाई शशि छायो करै
गुरु की कृपा तें बुद्धि विमल भरी रहै ॥
सुकवि 'गुविंद' द्वारकेश की दया तें सदा
कीरति अखंड महिमण्डल भरी रहै ॥
चरन सरोजन को परसैं महीप-मौलि
मञ्जु कञ्ज पानिन पै कमला खरी रहै ॥

ब्रजभूषनलाल तेजपुञ्ज को प्रकाशै भानु
मधुर गिरा पै गिरा "अधर धरी रहै" ॥१॥
गोविंददत्त चतुर्वेद

---

(१२६)

दासी सौति कंस की हमारी दुखदाइन है
वाकी याद आय रोम-रोमन भरी रहै ॥
आय-आय ध्यान तन घन सों घुमड़ि आवै
कृष्ण नेह मेह सींचो सरस हरी रहै ॥
कान्ह केलि-कुंजन को नैनन में छाय रह्यो
सुधि बुधि ऊगि आगि नाहिं बिसरी रहै ॥
उर तें उमड़ि बह-मद-मद रसना पै
नाहिन कढ़ै है हिय "अधर धरी रहै" ॥१॥
भोलाजी भण्डारी

---

(१२७)

गोपी वृंद जाको सुनि सुधि बुधि भूलि जात
नारद अचेत होय बीन को नहीं गहै ॥
शीतल अनल होत बहता अनिल नाहिं
पादप न डोलै रँच सूरज नहीं दहै ॥

सुनत भनंक पशु पच्छी मंत्र मुग्ध होत
सागर हू स्तब्ध होत जमुना नहीं बहै ॥
अहो ! ताहि बाँसुरी की कैसी दशा दीन होत
राधिका के देखत ही "अधर धरी रहै" ॥१॥

उमाशंकर द्विवेदी

---

(१२८)

करत सखी री एक राधा सों सलाह ऐसी
कारण कहा नेह प्रियतम भरी रहै ॥
बिछुड़े ना एक छन पल हू ना धरै धीर
मंजुल विशाल कर कंज में परी रहै ॥
ऐसो वश कीनो सौत वंशी, नंदनंदन कों
अन्य सुख भोग जन्य दुख सो जरी रहै ॥
समझे ना और हू की बिरह बिथा कों नेक
पान हेतु अधरा के "अधर धरी रहै" ॥१॥

नरहरि शास्त्री

---

(१२९)

कुंजन कदम्ब तले ग्वाल-बाल संग चले
गोधन के सोधन की व्यग्रता भरी रहै ॥

शीश पे मयूर पिच्छ कुण्डल है कानन में

पीत पट राजै माल गुंजन परी रहै ॥

कस्तूरी तिलक भाल लोचन विशाल लाल

चंद से वदन पर अलक छरी रहै ॥

ज्योलौं मनमोहन निहारूँ मैं सुरूप तोलौ

बाँसुरी मधुर तेरे "अधर धरी रहै" ॥१॥

छन्नूलाल मास्टर 'वृजेंद्र'

---

(२०) "कवि लोगन में भर दे फिर मस्ती"

(१३०)

चातुरता भर दीजिये चित्त में,

आलस को कर दीजिये पस्ती ॥

काव्य कलान के पद्य प्रबंधन

छन्द अमन्दन की सुख बस्ती ॥

त्यों 'नवनीत' अलंकृत सों

बन भूषित भाव अनेक प्रशस्ती ॥

बानि जू नेक-कृपा-करिके

"कवि लोगन में भर दे फिर मस्ती" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(१३१)

वीर चरित्र बखानि करै
उतसाह लहै अति भारत बस्ती ॥
मान हरै अभिमानिन को
सब भाँतिन सों अति ही निज दस्ती ॥
मात सरस्वति टेर सुनो
लखिके जिहि दीनन को अतिकस्ती ॥
होय प्रसन्न कृपा करिके
"कवि लोगन में भर दे फिर मस्ती ॥१॥

किशनलाल

---

(१३२)

ना रसना रसहू समझे,
पद आपस में करते 'मनि' कुस्ती ॥
छन्द सुछन्द फिरें जिनके,
न अलकृत की कृति की सुख बस्ती ॥
भाव को भाव न जान परे,
यति की गति का ? धुनि की सुनि सुस्ती ॥
भारति ! भारत के अब के
"कवि लोगन में भर दे फिर मस्ती" ॥ १ ॥

(१३३)

वीर कथा जग में प्रकटे,
पल में विनसे मन से सब सुस्ती ॥
धर्म सुशोभित हो जग में,
मग में रग में भर जाय सुचुस्ती ॥
भीति भगे, नव प्रीति जगे,
मिट जाय ये दासता की 'मनि' हस्ती ॥
भारति ! भारत के अब के
लोगन में भर दे फिर मस्ती" ॥ २ ॥
पो० 'मणि' शर्मा

(१३४)

रँग भूमि में आके कहैं कविता,
ध्वनि गूँज रहै बसतो बसती ॥
जनता रस वीर भरी पल में,
दल में सब देख परैं धसती ॥
जग फैलीं स्वतन्त्रता की खबरैं,
सबरैं सब जिस भई ससती ॥

अब ऐसे में कृष्ण कृपा करके,
"कवि लोगन में भर दे फिर मसती" ॥१॥
कविराज बिहारीलाल भट्ट

---

(१३५)

जेते अमीर हैं भारत के,
सब ही की सदैव रहे परवस्ती ॥
'गोविंद' काव्य को दान चुचात,
फिरैं बिन अंकुश के जिमि हस्ती ॥
मो रसना में सदा रस पुंज,
निवास करै वर नीति प्रशस्ती ॥
भारति ! भूरि कृपा करिके,
"कवि लोगन में भर दे फिर मस्ती" ॥१॥
- गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(२१) "श्रीद्वारकाधीश्वरः"

(१३६)

दर्भीसुकुमारपाणिकलितभृङ्गारनालोद्गल-
न्मन्दोष्णोदकसेकशीर्णनिपतज्जम्बालजालाकुलम् ॥

उद्यन्नैकविपादिकातिविषम विप्रस्य पादद्वयम्
पश्य क्षालयतीह लोचनजलैः "श्रीद्वारकाधीश्वरः" ॥१॥

पं० शोभालाल शास्त्री

---

(१३७)

शं वो रातु चिराय दैत्यदलने दम्भोलि रम्भो जने
शम्भोश्चापि हृदिस्थितः सुषुमया चाम्भोद दम्भोत्किरः ॥
जम्भोन्माथिकृताम्बुवर्षणपरित्रातः प्रियो गोकुलः
येन श्रीललना ललामरसिकः "श्रीद्वारकाधीश्वरः" ॥१॥

(१३८)

वत्त्व कम्बु सदम्बुनश्चिरमधस्थाभ्यां कराभ्यां तथा
तत्त्व कोः कमल सदोर्ध्वकरयोश्चक्र मुदा तेजसः ॥
वायोस्तत्त्वमशेषसुन्दरतनुः कौमोदकीं धारयन्
सर्वेषां वितनोतु मङ्गलमिह "श्रीद्वारकाधीश्वरः" ॥२॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(१३९)

नन्दप्राङ्गणलीलको व्रजवधू प्राणाधिको माधवो
गोलोक दुरभीष्टकानपि च योऽनैषीद् यशोदाङ्गजः ॥

लाकालोककरानलोकपरकान् ·यः स्वर्गतांश्च व्यधात्
मायामाणवको हरिः स जयतात् "श्रीद्वारकाधीश्वरः" ॥१॥
श्रीधर शास्त्री चतुर्वेद

---

(१४०)

प्रादुर्भूय यदोः कुले समहरद्भूभारभूतान् नृपान्
भीताया व्यसनं द्रुतं द्रवितवान् पाञ्चालजायाश्च यः ॥
यो गीतामुपदिश्य पाण्डुतनय घोर तमोऽनाशयत्
स श्रीमान दयो दयो विजयतां "श्रीद्वारकाधीश्वरः"॥१॥
सबलकिशोर शास्त्री चतुर्वेद

---

(१४१)

यस्यानुग्रहतस्तरन्ति मुनयः संसारपाथोधिकम्
प्रत्यूहाखिलवृन्दघोरतिमिरं यद्ध्यानतो नश्यते ॥
पूज्यब्रह्मसुरेन्द्रपूजितपदो गोस्वामिवंशाधिपो
रक्षेद्भूषणविट्ठलो स सततं "श्रीद्वारकाधीश्वरः" ॥१॥
परमानन्द शास्त्री

---

(१४२)

वेदैर्बाहुसरोरुहैः सुचतुरो वर्गान् ददत् सर्वदा
पुष्ट्या भक्तजनाय मुक्तिपदवी दानेरतो वै भृशम् ॥

श्रीमद्विट्ठलनाथगोपरिवृढैरानन्दसलालितो

भक्तेभ्यः शुभमङ्गलं वितनुतात् "श्रीद्वारकाधीश्वरः" ॥१॥

नरहरि शास्त्री

सप्तमाधिवेशन

द्वि० आषाढ़ कृ० ६, सं० ८८, ता० ७-७-३१

(२२) "कीजिये"

(१४३)

अच्छर जवाहिर को लहिबो कठिन याते
　　आप खरे खोटे को विचार कर लीजिये ॥
'नवनीत' भूषण औ दूषण अनेक यामें
　　वाक्य छल आदि को निकार धर दीजिये ॥
छन्द को बनायबो खिलायबो है सांपन को
　　कील मन्त्र पिंगल सों तबै कर छीजिये ॥
हाय जो प्रधान मन्त्री जानैं इन बातन को
　　कविता-समाज को प्रबन्ध ऐसो "कीजिये" ॥१॥

कविरत्न 'नवनीत'

---

(१४४)

कीजिये निवास नित्त तीर राजसागर के
　　राति द्यौस नीर राजसागर को पीजिये ॥

लेक्चर दिलाके, देके, करके प्रस्ताव पास
भारत वसुधरा को समुन्नत "कीजिये" ॥२॥
पो० 'मणि' शर्मा

---

(१४९)

ओडियर फ्रेंड चलो पेरिस विहार करें
ओल्ड फूल फेमलीज त्याग कर दीजिये ॥
वर्न दिस डर्टी ड्रेस, बूट कोट हैट धरो
मच पर लच लेके मिल्क-पंच पीजिये ॥
सीनेमा थियेटर थूकार पर बैठ चलें
गार्डन में वार्किंग हो, डाग पास लीजिये ॥
इफ यू विश लव टू मी आल वाइज देन
माई ऑल मेटर्स स्वीकृत सून "कीजिये" ॥१॥
छन्नूलाल वर्मा

---

(२३) "छत्र-छाया में"

(१५०)

गोपी ग्वाल गायन की आरत पुकार सुन
दया करि दीनबन्धु मोहित है माया में ॥
'नवनीत' अब ही बचाऊँ तुम्हें एक बार
डरो मति पानी की प्रमाद-भरी काया में ॥

करिके विचार चारु चौगुनो लगाय चित्त
हितकर सबको उपाय रचि दाया में ॥
इन्द्र-मख भंग कीनो नख पै उठाय लीनो
ब्रज को बचायो गिरिराज "छत्र-छाया में" ॥१॥

(१५१)

सन्तति औ' सम्पति सदैव भौन भाजन में
नियत सदा ही भूप भक्ति तुव काया में ॥
'नवनीत' प्यारे प्रीत रीत को प्रतीत रहै
नीत रहै धर्म-कर्म जीवन को दाया में ॥
रहो द्विजराज कीर्ति-कौमुदी प्रकाश रहै
विद्या को विशाल रहै गुनगन गाया में ॥
लाल ब्रजभूषन कृपाल करुना - निधान
रहिये प्रसन्न द्वारकेश "छत्र-छाया में" ॥२॥
'कविरत्न' नवनीतजी

---

(१५२)

लीनौ है जन्म ब्रह्म पूरन पुरुषोत्तम ने
देवकी उदर बीच मानुष की काया में ॥
खुलिगै किवार वज्र टूट गये तारे सब
सोये रखवारे महामोह-नींद माया में ॥

लेक्चर दिलाके, देके, करके प्रस्ताव पास
भारत वसुधरा को समुन्नत "कीजिये"।
पो० 'मणि' ड

---

(१४९)

ओहियर फ्रेंड चलो पेरिस विहार करें
ओल्ड फूल फेमलीज त्याग कर दीजिये
थर्न दिस डर्टी ड्रेस, बूट कोट हैट धरो
मच पर लच लेके मिल्क-पच पीजिये
सीनेमा थियेटर थूकार पर बैठ चलें
गार्डन में वाकिंग हो, डाग पास लीजिये
इफ यू विश लव टू मी आल वाइज देन
माई ऑल मेटर्स स्वीकृत सून "कीजिये"
छन्नूलाल व

---

(२३) "छत्र-छाया में"

(१५०)

गोपी ग्वाल गायन की आरत पुकार सुन
दया करि दीनबन्धु मोहित है माया में
'नवनीत' अब ही बचाऊँ तुम्हें एक बार
डरो मति पानी की प्रमाद-भरी काया में

करिके विचार चारु चौगुनो लगाय चित्त
हितकर सबको उपाय रचि छाया में ॥
इन्द्र-मख भंग कीनो नख पै उठाय लीनो
ब्रज को बचायो गिरिराज "छत्र-छाया में" ॥१॥

(१५१)

सन्तति औ' सम्पति सदैव भौन भाजन में
नियत सदा ही भूप भक्ति तुव काया में ॥
'नवनीत' प्यारे प्रीत रीत की प्रतीत रहै
नीत रहै धर्म-कर्म जीवन की छाया में ॥
रहो द्विजराज कीर्ति-कौमुदी प्रकाश रहै
विद्या को विशाल रहै गुनगन गाया में ॥
लाल ब्रजभूषन कृपाल करुना - निधान
रहिये प्रसन्न द्वारकेश "छत्र-छाया में" ॥२॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(१५२)

लीनौ है जन्म ब्रह्म पूरन पुरुषोत्तम ने
देवकी उदर बीच मानुष की काया में ॥
खुलिगै किवार वज्र टूट गये तारे सब
सोये रखवारे महामोह-नींद माया में ॥

बर्सन लग्यो है मेह बाट ना चलत कोई
निशि अँधियारी घोर घन घहराया में ॥
ताही समै वसुदेव 'कृष्ण' धरि सूप माँहि
गोकुल पधारे लेके शेष "छत्र-छाया में" ॥१॥

किशनलाल

---

(१५३)

विषय मरीचिका की चाह तें भुलान्यो राह
उपज्यो विशाल दाह अन्तर औ' काया में ॥
द्रोह मोह कोहहू की दुखद दवागिन तें
बिनस्यो विलास तऊ मति सुत जाया में ॥
काल व्याधता ने तीर 'मनि' तनु ताक-ताक
तापे बिसवास होत हाय तुव माया में ॥
ग्रीष्म भव तप्त एरे मेरे जीव नेक रहु
श्रीहरि पदारविन्द मजु "छत्र-छाया में" ॥१॥

(१५४)

ो विरोध लख ो नेक न बिभीसन में
धर्म-कर्म देख्यं ना गौतम मुनि जाया में ॥
प्रजामिल के औगुन न दीनो दीठ
। ने कै लोनों बिष काया में ॥

सहज सुभाव निज करुणा बिसार हरि
नेकु ध्यान देते कहूँ करनी को माया में ॥
द्रुपद-सुता को यदि विपद विदारते ना
जातो कहु कौन ? 'मनि' भक्ति "छत्र-छाया में" ॥२॥

(१५५)

परम उदार जन रञ्जन विशुद्ध भाव
गुन-गान समस्त सदा सोहैं तुव काया में ॥
दानी देव पादप से मानो कवि कोविद के
ज्ञानी सुखखानो होहु सागर जन दाया में ॥
महिमा महान तुव महि मान मान 'मनि'
राखत अनुरक्ति होहु प्रीति नीति जाया में ॥
लाल ब्रजभूषनजू दीपत दिगन्त रहु
ओढ़ारकेश प्रभु की विशाल "छत्र-छाया में" ॥३॥
प्रो० 'मणि' शर्मा

---

(२४) "ब्रजभूषणाः"

(१५६)

सुमधुरैर्वचनैः स्मितसम्भृतैः
विमलया च धिया स्थिरसूक्ष्मया ॥

(७०)

सहृदयस्य न कस्य हृदम्बुज
विकचयन्तितरां "व्रजभूषणाः" ॥१॥
शोभालाल शास्त्री

---

(१५७)

णगाम्भीर्यप्रोल्लसच्चरणाम्बुजाः ॥
।चणाः शुद्धाः जयन्तु "व्रजभूषणाः" ॥१॥

(१५८)

ट्टरवल्लोशाः प्रजापालनतत्पराः ॥
रणासक्ताः जयन्तु "व्रजभूषणाः" ॥२॥

(१५९)

सुबोधिन्यादि शास्त्राणां प्रत्यहञ्चोपदेशतः ॥
स्वकीयान्वैष्णवान्सर्वान् प्रयान्तु "व्रजभूषणाः" ॥३॥

(१६०)

वर्तमाने वत्सरेऽस्मिन्नात्मज प्रियदर्शनम् ॥
देशिकेन्द्रगुणोपेतं लभध्वं "व्रजभूषणाः" ॥४॥
भट्ट जटाशंकर शास्त्री

(१६१)

कवीन्द्रकुलकल्याणी, काव्यकाननकेसरी ॥
कवितैककलानाथो जयतु "व्रजभूषणः" ॥१॥

श्रीवर शास्त्री चतुर्वेद

---

(१६२)

अखण्डमण्डलाचार्यो भूषणानां विभूषणः ॥
यशसा वर्धतां नित्यं गोस्वामि "व्रजभूषणः" ॥१॥

परमानन्द शास्त्री

---

(१६३)

जगति सञ्चितसुंदरसद्गुणाः
परमकारुणिका गतदूषणाः ॥
नय पथे विहितैकगवेषणाः
अतिजयन्तु चिर "व्रजभूषणाः" ॥१॥

कण्ठमणि शास्त्री

---

(२५) "मङ्गलानि"

(१६४)

ऐश्वर्यं श्रीविमलवसतिर्नीतिभावः प्रजायाम्
ज्ञानं दानं गुणगणयुतो धर्मकर्मप्रवाहः ॥

(७२)

भक्तिः कृष्णे हसितविशद सद्यशः क्ष्मातले स्यात्
भूयासुस्ते भविकभवने सर्वदा "मङ्गलानि" ॥१॥
पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(१६५)

समस्तभक्तार्तिहरो मुरारिः प्रयन्तरक्षां विदधद् मकारिः ॥
अव्यक्तवर्त्मा हरतान्मलानि तनोतु कृष्णो जन "मङ्गलानि" ॥१॥

(१६६)

वर्षन्तु मेघा मुदिता जलानि प्रचालयन्तां कृषिका हलानि ॥
वृक्षाः प्रयच्छन्तु महाफलानि तनोतु कृष्णो जन "मङ्गलानि"॥२॥
भट्ट जटाशंकर शास्त्री

---

(१६७)

भवतु जगति भूयो देवभाषाप्रचारः
प्रतिगृहमिति लोको भारतोयोऽपि वष्टि ॥
परमिह जनतायाः सर्वथा दुःखितायाः
वितरतु जयपाणे ! साम्प्रत "मङ्गलानि" ॥१॥
श्रीवर शास्त्री चतुर्वेद

---

(१६८)

नियमितधृतधारा पावनी लोकवन्द्या
गिरिशमुपचरन्ती दुष्कृतौघप्रहर्त्री
वृजिनजनितभीतेस्त्रायमाणा स्वभक्तान्
दिशतु जगति नित्यं जाह्नवी "मङ्गलानि" ॥१॥

परमानन्द शास्त्री

अष्टमाधिवेशन

श्रा० कृ० ३, सं० ८८, ता० ३०-७-३१

(२६) "हारी है"

[हीनता-उपालम्भ]

(१६९)

तीन गुन मों में तू तो निर्गुण बतायो जात
मैं हूँ देहधारी तूने देह छोड़ डारी है ॥
नाम धर्म मेरे तोमें रंचक न याको लेस
आदि अंत मेरी वृत्ति, तेरो ना निहारी है ॥
कर्म करता हूँ 'मनि' निष्क्रिय हमेश ही तू
दैव तन्त्र मैं हूँ तू तो स्वच्छन्द खल भारी है ॥
तापे अश मोकूँ तोकूँ जन जगदीश कहै
ऐसो न्याय भावना की नाथ ! बलि "हारी है" ॥१॥

[समानता-उपालम्भ]

(१७०)

मैं भी धन लोभी तू भी लोलुप रमा का प्रभु
भिक्षुक हूँ तू भी विप्र तण्डुल भिखारी है ॥

खाये हैं अभक्ष्य मैंने तूने शबरी के बेर
दोनों की जाहिर 'मनि' चोरी पुनि जारी है॥
भक्त परतन्त्र* प्रीति रसना निबद्ध दोनों
नियम विमुक्त मैं भी तू भी अधिकारी है॥
दोनों ही समानशील व्यसन सखा हैं किन्तु
मैं हूँ दण्ड पाता तू क्यों छूटता वि"हारी है" ॥२॥

[उच्चता-उपालम्भ]

(१७१)

मैं हूँ क्रोध-सिन्धु तू है पूरन दया का सिन्धु
विषय विकार भरा मैं तू निर्विकारी है॥
औगुन अनेक मोमें, सद्गुन गिने न जात
तेरे, मैं कुरूप तेरी मञ्जु छवि न्यारी है॥
एक कन मैं हूँ तूतो व्यापक चराचर मे
पाप-घट मैं हूँ तूतो धरम सधारी है॥
अज्ञ जान हाय मै हूँ तू है सरवज्ञ 'मनि'
ऐसे कार्य कारन को देख मति "हारी है" ॥३॥

---

* दो अर्थ —भक्त और अन्न प्रीति रूपी रज्जु और प्रीति तथा जिह्वा, अधिकारी तथा अधिक अरि शत्रु जिसके।

(१७२)

रावन बिनास आस सरन बिभीसन को
सुपद कपीसन को दीनों सुखकारी है ॥
गीध सनमान्यो प्रान दीन्यो प्रान प्यारो हेत
तारत अहल्या ताको माप पापहारी है ॥
करत पुकार बार बार बन्धु जाया जानि
द्रुपदसुता की यातें राखो आप सारी है ॥
एते जो उबारे तेते स्वारथ बिलोक 'मनि'
मो सम उबारो तोलो नाथ ! बलि "हारी है" ॥४॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(१७३)

एरी बीर मोहन की बात एक तोसों कहौं
निपट निराली गति देख मति हारो है ॥
भौर जान मोहिं नीर लेन नद तीर गई
वाने चुप आय दही मथनी उघारो है ॥
औचक ही हाथ जाय पकर्यो, जसोदा ढिंग
पहुँची बिलोकि सबै देत हँसि तारो है ॥

देख्यो कत हाथ गह्यो मेरो ढिग रोय रह्यो

आगे मुसक्याय रह्यो नन्द को बि"हारो है" ॥१॥

छन्नूलाल वर्मा 'ब्रजेंद्र'

---

(२७) "विराजे हैं"

(१७४)

विजयपताक फहरात नभ-मण्डल में

चमक दमक मोती दाम छवि छाजे हैं ॥

शैव्य सुग्रीव मेघ पुष्पक बलाहक अश्व

जब गति पेखि वायु मानस हू लाजे हैं ॥

बरनी न जात नव सुषमा विशेष 'मनि'

मञ्जुल प्रसुन वृष्टि गाजे घन बाजे हैं ॥

सुखद असाढ़ सित दूज पुष्य ऋच्छ दिन

द्वारकाधिराज आज रथ में "विराजे हैं" ॥१॥

(१७५)

नाथ भक्तवत्सलता केतिक गिनाऊँ तुव

शिशु प्रहलाद काज सिंह रूप छाजे हैं ॥

नक्र नक्र वक्त्र को विदारिवे सुचक्र लिये

हेत गजराज तज बाहन 'मनि' भाजे हैं ॥

दुखद दुसासन दुकूल खेंचि खेंचि थक्यो
द्रुपद-सुता को लाज काज वस्त्र साजे हैं ॥
पारथ के स्वारथ ते भारत त्रिलोकीनाथ
सारथ को रूप धारि रथ में "विराजे हैं" ॥२॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(१७६)

परम प्रकाशमान भासमान भानु सम
स्यदन सिंगार करि स्वच्छ साज साजे हैं ॥
पुष्पक विमान सम पौन ते प्रबल वेग
तरुन तुरगन को उपमा न छाजे हैं ॥
पुष्प बरसात हरसात मन देवगन
दरसन किये ते ही पाप-पुञ्ज भाजे हैं ।
दीनन के नाथ साथ सेना चतुरग लिये
द्वारकाधिनाथ आज रथ में "विराजे हैं" ॥१॥

'व्रजेन्द्र' वर्मा

---

(१७७)

दीनन की टेर सुनि धाये द्वारिका ते 'नाथ'
गनिका गयद टेर सुनि द्रुत भाजे हैं ॥

वनिता व्रज ग्वाल-बाल गायन समेत हू
ललिता विशाखा संग राधिका विराजे हैं ॥
द्रुपद-सुता औ' सत्यभामा भीलिनी के दुःख
छिन में ढहाये यश कीर्ति मही छाजे हैं ॥
तोय में पुकारूँ कष्ट करिवे को बेर-बेर
नाथ द्वारका के द्वार काके जा "विराजे हैं" ॥१॥

पो० उपेन्द्रनाथ शर्मा

---

(२८) "पायात्"

(१७८)

करेभ्यो गदा शंखचक्राब्जमूला-
न्युपादाय भक्ता वनायोद्यतो यः ॥
निरस्यास्य कान्त्या तमिस्त्र ददिस्थ
सदा द्वारकाधीश्वरस्त्वां च "पायात्" ॥१॥

(१७९)

सुरभितमुकुलस्रग्भूषणैः शोभमानात्
मणिखचितसुवर्णान्दोलके राजमानात् ॥
व्रजपरिजनभक्तैः सस्पृह सेव्यमानात्
सकलभुवननाथादन्तरा को नु "पायात्" ॥२॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(२९) "मेदपाटः"

(१८०)

जयति नयविवेकक्षेमशर्मप्रतिष्ठा-

सहितगुणचयेन श्रीमता चेश भक्त्या॥

निरुपमबलदर्पैर्धर्मरक्षा कपाटः

सकलभुवनचूडा हीरको "मेदपाटः" ॥१॥

(१८१)

अतिविशदनुतीनामार्यधर्मकृतीनाम्

नय विजयमतीनां सर्वथा सद्गतीनाम्॥

विदितगुणततीनां भूपतीनां सतीनाम्

अपि परमयतीनामाकरो "मेदपाटः" ॥२॥

(१८२)

यत्र श्रीमत्प्रतापेऽधिपपरमगुरौ शासमानेऽसमाने

नीतिश्रीकीर्तिधर्माः प्रतिभटहृदयं कम्पयामासुरुच्चैः॥

सोऽयं विद्याविवेके क्षितिपगुणगणे धर्मसंरक्षणे च

विश्वस्यां वीरभूमौ खलबलदहनो द्योतते "मेदपाटः" ॥३॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

भाद्र० कृ० २, सं० ८८, ता० ३०-८-३१

(३०) "माना है"

(१८३)

मच्छ वेदरच्छ रूप-कच्छ पीठ मद्राचल
धारि भू वराह हन्यो हिरण्याक्ष दाना है ॥
नाहर विदार्यो दैत्य वामन छल्यो है बलि
जामदग्न्य छत्रिन को निपट निदाना है ॥
रावण को राम बलराम ने प्रलम्बासुर
करुणामय बुद्ध कल्कि म्लेच्छ वध ठाना है ॥
या विधि सों दसौं अवतार भूमि भार हर्यो
'नवनीत' प्यारो कृष्ण एक मूल "माना है" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(१८४)

बाना जो बनाया राजद्रोही का जु ठीक-ठीक
पाठ जो पढ़ाया जग तैस कर ढाना है ॥

धर्म-कर्म छोड़ सब एक ही कराके चले
राज के मुहाने जान नाहक गमाना है ॥
'प्रेम' कवि कहैं ऐसे फन्द में न कोई फँसो
विद्या बल हीन ह्वै सुराज क्या जमाना है ॥
गांधी घनचक्कर के चक्कर चढ़े हैं जन
खुफिया न मान उसे देशभक्त "माना है" ॥१॥

बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(१८५)

शयन न कीजिये पलग पर भारतीयो !
खुद जगना है और जग को जगाना है ॥
उथल-पुथल पृथवी को करना है फेर
झण्डा राष्ट्रीय का अकाश फहराना है ॥
निज कर कृपान पै कटीली है चढ़ानी धार
मार में शिवा ज्यों किये म्लेच्छ कलकाना है ॥
छार कर कुटिल कमाना है सुकृत वीरो !
वीरता दिखाओ अब पलटा ज"माना है" ॥१॥

गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(१८६)

गावत महेश शेष विधि गुन जाके नित
पावत न भेद वेद करत बखाना है ॥
सोई जन्म लीनों वसुदेव भौन मथुरा में
नन्दघर गोकुल में जाय प्रघटाना है ॥
अद्भुत विचित्र बाल-लीला।जिन करी महा
गोप वेश धारि वन गायन चराना है ॥
बाँसुरी बजाना पीत पटका धराना चोर
माखन कहाना 'कृष्ण' जगत मन "माना है" ॥१॥

किशनलाल 'कृष्ण'

---

(१८७)

धर्म मोक्ष दोनों की हुकूमत चलेगी नहीं
अर्थ काम ही का 'मनि' कलि में ठिकाना है ॥
साम्यवाद नाते लूट लेना धनियों का धन
चंदा माँग खाना देश-हित का बहाना है ॥
विधवा-विवाह लेना, गृहिणी तलाक देना
वेश्या पुत्रिका को धर्म-ललना बनाना है ॥
इच्छा हो उसी के साथ खाने, मौज करने का
बीसवीं सदी का फेशनेबुल ज"माना है" ॥१॥

(१८८)

यद्यपि चराचर में ईश हो विराजमान

किन्तु नई बात आज तुमको सुनाना है ॥

विश्वम्भर हो तो रहो कौन पूछता है तुम्हें ?

मेहनत मजदूरी से खाना कमाना है ॥

हो तो जगदीश पर शासन तुम्हारा नहीं

'मनि' कलदार कलदार ही बजाना है ॥

ग्रेजुएट होओ या तो काम छोड़ बैठो आप

बीसवीं सदी का आया नूतन ज"माना है" ॥२॥

(१८९)

आपका यशोदा पुत्र धूर्त छल छदी हुआ

उसकी करतूतों का रोना और गाना है ॥

दूध फेंक जाना दधि-भाण्ड फोड़ जाना बच्छ-

गाय छोड़ जाना सीखा मुँह मटकाना है ॥

बानर बुलाना रोटा माखन खिलाना उन्हें

देखना तमाशा और बनना सयाना है ॥

तग आ गई हूँ ब्रज छोड़ चल दूँगी 'मनि'

मुझको असह्य हुआ ढग मन"माना है" ॥३॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(१९०)

सदाचार संयम औ' उन्नत विचारयुत
जीवन को जगत बीच युक्ति से जगाना है ॥
क्रोह मोह द्रोह द्वेष दुष्टन को दूर कर
प्रेम के विशुद्ध पथ मन को चलाना है ॥
सेवा का विशुद्ध भाव हिय में भरा हो खूब
देश धर्म जाति हित गति को लगाना है ॥
ऐसा हो आदर्शमय जीवन हमारा जब
तभी जन जीवन को श्रेष्ठतम "माना है" ॥१॥

'नरेंद्र' वर्मा

—

(१९१)

माना है 'व्रजेन्द्र' है स्वराज्य ही हमारा ध्येय
विदेशी कुवस्तुओं का बायकाट ठाना है ॥
ठाना है भले ही सब चढ़ें बलि-वेदी पर
लगन लगी है वह हिय से न जाना है ॥
जाना है सत्याग्रह जरूर ही सफल होगा
दासता की बेड़ियों से शीघ्र मुक्ति पाना है ॥

पाना है हमारा स्वत्व गाना है स्वदेश गीत
मोहन का मूल मन्त्र किसने न "माना है" ॥ १ ॥
छन्नूलाल 'वृजेंद्र' वर्मा

---

(३१) "सुहावनो"

(१९२)

सुकवि सुजानन के उर उफनान लागे
आन लागे वरन विचित्र युक्ति लावनो ॥
'नवनीत' व्यङ्ग ध्वनि ओज माधुरी प्रसार
छन्द के प्रबन्धन विनोद बरसावनो ॥
नव रस भेद हाव भावन विचार चारु
नायकादि नायक को दरस दिखावनो ॥
महराज श्रीमद् वृजभूषन कृपा ते आयो
कविता की उन्नति को समय "सुहावनो" ॥१॥
'कविरत्न' नवनीतजी

---

(१९३)

छावनो वटान को सुलागत सुखद आलो
चपला चमक चित चायन बढावनो ॥

(८७)

सावनो समीर को सुसीतल सुगंध लिये
अंगन परसि 'प्रेम' मदन जगावनो ॥
गावनो मलार को झुलावनो सुबागन में
भागन मिलेगो रस सुख हुलसावनो ॥
आवनो सुपीको सुनि विरह परावनो भौ
भावनो भवन लागे सावन "सुहावनो" ॥१॥

भट्ट बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(१९४)

"कृष्ण' घन छाय रहे घने नभ मंडल में
नन्हो नन्हो बूँदन को धरा पे गिरावनो ॥
शीतल सुगंध भरी वहै मंद मंद पौन
चारों ओर मोरन को शोर जो मचावनो ॥
फूली द्रुम बेली सबै भूमि हरयाली छई
सरिता तलाव वापी जल सों भरावनो ॥
झूलें कुंज कुंजन में सखियाँ उमङ्ग-भरी
गावें मिल गीत आयो सावन "सुहावनो"॥१॥

किशन'कृष्ण'लाल

---

(१९५)

कारे मतवारे नीरधारे चढ़ि आये मेघ
बरसत बुंद नेह सोभा सरसावनो ॥
चातक 'वृजेंद्र' मोर कोकिल करत सोर
झींगुर झकारे सो मनोज उपजावनो ॥
दादुर दुकारें ज्योति रिंगन दमक होत
चपला चमक होत यदपि लुभावनो ॥
तू ही कह ? आली जोपै बालम बिदेश होय
तोपै ये लगेगो कैसो सावन "सुहावनो" ॥१॥
छन्नूलाल वर्मा 'व्रजेंद्र'

---

(१९६)

घहर घहर घटा छाई छिति मंडल पै
डरर डरर बोले दादुर डरावनो ॥
घरर घरर धुनि चहुँघा सुनाई परै
तरर तरर नीर बरसै भयावनो ॥
सरर सरर 'मनि' सरस समीर बहै
हरर हरर होत-हिय सुखदावनो ॥

री मनभावन को आवन अज्यों न भयो
आवन वृथा ही भयो सावन "सुहावनो" ॥१॥
पो० 'मणि' शर्मा

---

(१९७)

चोहतु चलाय चख चीन को विलीन कांह
चौंकि जात चित्त, चित्र देखिके डरावनो ॥
भारतीय भूखे जन और भो विहाल भये
बार-बार वारिद को देख बरसावनो ॥
नदियाँ उमड पड़ी खेती भई छीन हीन
चहुँ ओर छोर घोर घरन को ढावनो ॥
याहि मास खास घट्यो वारिद प्रचण्ड कोप
कैसे कहें फेरि याहि सावन "सुहावनो!" ॥१॥
'नरेन्द्र' वर्मा

सावन शोक नशावन है नहिं राम चरित्र मेरे मन भावनो
भावे न मोहि घटा घन की वन की हरियाली लगो लुभावनो ॥

तावन कोऊ कहै उनको उनको करजोरि कह्यौ गुन गावनो
गावन में सबको सुख है हमको सुख हो सुख श्याम "सुहावनो" ॥१॥

पड्या मोहनलाल

---

(३२) "राजते"

(१९९)

श्रीमद्भागवताख्यसङ्गतसुधा सम्पीतये प्रीतये
भक्तेभ्यःप्रददाषपारकरुणो भक्त्यब्जिनो वल्लभ ॥
व्याख्यां काञ्चनकाञ्चनाच्छचषकस्थानेऽप्यनन्योपमां
योऽसौ विश्वजनीनजीवनयुतः श्रीवल्लभो "राजते"॥ १ ॥

(२००)

काङ्करोली पुरी सैषा समुद्रो रायसागरः ॥
तत्र साक्षात्परं ब्रह्म द्वारकेशो "विराजते" ॥ २ ॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(२०१)

स्वकीयजनरक्षार्थं मोक्षार्थं मोक्षकाङ्क्षिणाम् ॥
करुणासागरः कृष्णो भक्तस्वान्तेषु "राजते" ॥१।

(२०२)

राजसिन्धोस्तटे रम्ये हंससारससेविते ।
आकाशचुम्बिते हर्म्ये द्वारकेशो "विराजते" ॥२।

(२०३)

अशेषगुणगाम्भीर्यविजिताखिलभूमिपे ॥
सर्वरक्षापरे नित्यं क्षात्रं राजनि "राजते" ॥

भट्ट जटाशङ्कर शास्त्री

---

(२०४)

नीवृज्जातिकुलानि यः स्वयशसा स्फीतान्यकार्षीद् भुवि
प्रायः श्रीशकृपाबलादगणितक्लेशाधिसम्मर्द्दनः ॥
निर्भीकः कथयँश्च नो विकुरुतेऽनीतिं नृपस्यापि यः
स श्रेयो समितौ बुधां प्रकटयन् शास्त्री गुणै "राजते" ॥ १ ॥

श्रीवर शास्त्री

मानस्या किल गङ्गया परिवृतो नृत्यन्मयूराश्रय-
श्चञ्चच्चन्द्रिकचन्द्रबिम्बशिशिरः प्रच्छायवृक्षालिषु ॥
प्रोद्यन्तर्णकवत्सवृन्दसहिता गा वर्धयँश्चास्य-
न्नन्वर्थो व्रजभूमिभूषणगिरिर्गोवर्धनो "राजते" ॥ १ ॥

मिश्र परमानन्द शास्त्री

---

(२०६)

प्रातः शृङ्गरवेण सर्वसुहृदः सम्बोध्य संहर्षयन्
साकं तैर्विचचार चारुचरितो वृन्दावने साग्रजः ॥
गाः सञ्चाल्य-दिनक्षये कलपदं गायन् व्रज संविशन्
तन्वन्गोपवधूषु मोदमवर वंशीधरो "राजते" ॥ १ ॥

प० प्रयागीलाल द्विवेदी

---

(३२) "श्रीशभक्ताः"

(२०७)

येषामङ्गे विलसतितरां नम्रता मूर्तिरूपा
येषां तुष्टिर्निवसति मनस्युज्झितार्थार्थभूपाः ॥
विद्योतन्ते वचसि भगवत्कीर्तनान्येव येषां
भक्त्या शक्त्या परममुदितास्ते मताः"श्रीशभक्ताः" ॥ १ ॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(२०८)

स्वर्गे लोके समग्रे क्वचिदपि वसतिं नैव संस्पर्धमानाः
कुम्भीपाके विशाले नहि पतनभिया क्लिश्यमानाः कदाचित् ॥

(६२)

...धाकृष्णस्य सेवा परिगतमनसश्चञ्चरीकायमाणा
...दास्य नित्यं लभन्ते प्रभुचरणपराः श्रीहरेः "श्रीशभक्ताः" ॥१।

भट्ट जटाशङ्कर शास्त्री

---

(२०९)

किमिव खलु जनानां कार्यजातं धरायां
परिणतिमिह लब्धा नेदृशं यत्कथञ्चित् ॥
नत इदमनुमेयं ये परायत्तजीवाः
विकृतिमुपलभन्ते नैव ते "श्रीशभक्ताः" ॥१॥

प० श्रीवर शास्त्री

---

(२१०)

पुण्या श्रीभारतजनिरिहाऽऽराधितब्रह्मविद्याः
शिक्षावाक्यैः सदयहृदयान्यत्र सहर्षयन्तः ॥
भक्तान्सर्वांस्तान्परमसुधियो यश्च नित्य पुनानाः
राजन्ते श्रीविमलयशसो भूषणाः "श्रीशभक्ताः" ॥१॥

मिश्र परमानन्द शास्त्री

---

(२११)

सदा ये हरेः पादपद्म भजन्ते

स्वया जिह्वया सद्गुणान्सङ्गिरन्ते ॥

शुभैः कर्मभिस्तत्कृपायै यतन्ते

सुखं तेऽनिशं भुञ्जते "श्रीशभक्ताः" ॥१॥

प० प्रयागीलाल द्विवेदी

दशमाधिवेशन

आश्विन कृ० १, सं० ८८, ता० २७-९-३१

(३४) "आती है" ❀

(२१२)

चूनरि समान चारु चौंप चटकीलो चीर
इन्द्रवधू आँगुरीन जावक लगाई है॥
'नवनीत' प्यारे घेर घाँघरो घुमड़ सोई
झींगुर झमंक पग पायल सजाई है॥
जुगनू जमात हार भूषन विहंग-धार
चचला चपल दूती टेर घर लाई है॥
मंद मंद आवत बढ़ावत अनन्द यातें
पावस न होय नई दुलहिन "आई है" ॥१॥

(२१३)

कौन लख लीनी जानें बावरी-सी कर दीनी
होनी भई देह ज्योति मुरझाई छाई है॥

❀ कई कवियों ने इसे "आई है" समझकर पूर्ति की है।

'नवनीत' खोले है न नैन औ' न बोले बैन
भई कछु मैन ही की नई प्रभुताई है ॥
बैठ रही थिर है बिसारो खान-पान सबै
चित्र की-सी लिखी रही ग्रोव निहुराई है ॥
हाय यह कैसे हेत खेत में फसो री जाय
गई ही सचेत पे अचेत बनि "आई है" ॥२॥
'कविरत्न' नवनीतजी

---

(२१४)

रही जो जों रही परतन्त्रता सदन मेरे
मर चुकी ताकी भई हिन्द मे बिदाई है ॥
गांधी-सा सपूत मेरा बिधुर कहाता रहा
ईश को भी देख के विपत्ति- छोह छाई है ॥
'रामाधीन' भाखे नवशाह है बनाया इसे
फरमाई यूरुप में, पुनः सगाई है ॥
आयेगी पतोहिनी स्वतंत्रता भवन मेरे
सायत विवाह की पहोर अब "आई है" ॥१॥
रामाधीनलाल खरे

---

(२१५)

केसर कमलपत्र धोयो सो लगत बाल
हाल ही विहाल ते री दीसत दिखाई है ॥
स्वेद-कन छाई मुख आई पियराई काहे
अंगन थकाई लाई नैनन ललाई है ॥
ढीठ ढीठ वेनी पीठ बिथुरी परत ढीठ
दीठ को दुराय मोसो करत सफाई है ॥
मेनहीं पठाई 'प्रेम' बोलन बिसासी जानि
आपु ही सहेट में नदी-सी न्हाय "आई है" ॥१॥

(२१६)

आवति अकेली आज भोर ही कहाँ ते बाल
मुख पियराई छाई अंग शिथिलाई है ॥
'प्रेम' को कपोल पीक लीक हू दिखाई देत
भौहैं अलसाई आई नैन अरुनाई है ॥
दीठ ही दुरात पै दुरै न यह प्रीत रीत
नाहक दुरावे मति मेरी सिखराई है ॥
रति रगि आई तू यों मोहनलला के सग
माधुरी अधर रस मधु चखि "आई है" ॥२॥

भट्ट बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(२१७)

बादल नहीं है दल दौड़त उड़ी है धूल
यह न घटा है गज-घटना सुहाती है ॥
विद्युत नहीं है भाला तेग तलवारों की
दमक चमक चित्त शंका उपजाती है ॥
धुड़म धड़ाम घन गर्जन नहीं है 'मनि'
तोप कर कोप गोला आग उगलाती है ॥
भूमि थरकाती कुल भूधर कँपाती शत्रु
छाती दरकाती शिवा सेना दौड़ "आती है" ॥१॥

(२१८)

पल पल बीतता हजार युग जैसा, तुझे
देखता नहीं हूँ अश्रुधारा बह जाती है ॥
किधर गया है मुख चंद्रिका दिखाता क्यों न ?
जिह्वा-यह बोल बोल नित्य थक जाती है ॥
तेरी अभिलाष से हो ढाढ़स बँधाता 'मनि'
होती है निराशा तब छाती हहराती है ॥
कौन हूँ कहाँ हूँ यह भूल सब जाता हरे !
नंद के कुमार ! जब तेरी याद "आती है" ॥२॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(२१९)

कैधों शृंगार सुधा सरवर खिल्यों है कंज
नन्दन निकुंज कैधों ललिता सुहाती है ॥
कैधों कल कौमुदी को कोमल कला है चारु
कैधों मनमोहिनी की मंजु छवि छाती है ॥
रूप की घटा में कैधों दामिनी दमंक रही
छहरी छबीली छटा छिति को छुपाती है ॥
कैधों मुस्कान-भरी मधुरिमा विभासमान
सुषमा विलोकि हिय उपमा न "आती है" ॥ १ ॥

'नरेन्द्र' वर्मा

(३५) "लावेंगे"

(२२०)

तन भयो जीरन जवानी कढ़ि दूरि गई
नई भई वेदना विचार उर आवेंगे ॥
श्वेत भये केस मुख दंतन विहीन भयो
नैनन की जोति घटी कैसे देख पावेंगे ॥
हारि गई हिम्मत सभी की सब भाँतिन सों
अब तो जरूर यह बात ठहरावेंगे ॥

(१००)

गावेंगे चरित्र चित्रलीला पुरुषोत्तम के
निज कविता में नीत कृष्ण रस "लावेंगे" ॥ १ ॥
'कविरत्न' नवनीतजी

---

(२२१)

माता हिंद ईश को मनाय कहे बार-बार
मेरे लाल ससुराल सकुशल जावेंगे ॥
नाइडू बहिन लिए मर्म सब जानने को
संग शहबाला मालवीय को बनावेंगे ॥
'रामाधीन' भाखे भाई शौकतअली हैं पूरे
विविध विवादों के जो खेल दिखलावेंगे ॥
गांधी नवशाह ले बरात अब योरप से
दूल्हन स्वतंत्रता विवाह घर "लावेंगे" ॥ १ ॥
रामाधीनलाल खरे

---

(२२२)

जुरि सब आई ब्रजबाल चहुँ ओरन तें
पूँछति उसास लै लै प्यारे कब आवेंगे ॥
पलक कलप सम बीतत हमारे हाय
कौन दोष त्यागीं हमें कब समुझावेंगे ॥

(२२१)

'प्रेम'कर बीनती तू आखिरी सुनाय दीजो
एक न बचैगो हम तब पछतावेंगे ॥
लगन लगावन को विरह बुझावन को
आवन को कृष्ण ऊधो कब चित "लावेंगे"॥ १ ॥
भट्ट बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(२२३)

छोड़ के स्वधर्म देश सभ्यता विशाल भार
विश्व-घुड़दौड़ बीच आगे दौड़ जावेंगे ॥
उन्नति करेंगे विद्या पढ़ के विलायत की
'मनि' जो गुरू थे वही शिष्य बन जावेंगे ॥
जीतकर अन्य देश जिसने स्वतंत्र किए
भारत सपूत भीख माँग हरसावेंगे ॥
गोल मेज लंदन में हाथ जोड़ हैं हैं कर
देश के निखट्टू ये स्वराज्य माँग "लावेंगे" ॥ १ ॥

(२२४)

गर्भिणी हुई है भारत देवी स्वतंत्रता हू
मात गेह लंदन में प्रसव करावेंगे ॥

(१०२)

गोल मेज आलय में नायडू बनेगो नर्स
लार्ड इरविंग डाकटर बन जावेंगे ॥
विप्र मालवीय जातकरम करेंगे सबै
मङ्गल के गीत बैठे प्रतिनिधि गावेंगे ॥
'मोहन' कृपा तें गांधी मोहन प्रवीन 'मनि'
मोदयुत गोद में स्वराज्य शिशु "लावेंगे" ॥ २ ॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(२२५)

भारत फकीर गान्धी दुर्दम प्रभाव हू कि
लंदन की छाती पर छाप ही जमावेंगे ॥
द्वेष दुष्ट दानवी दुःशासन का अन्त कर
ब्रिटिश का मान भूत मन से हटावेंगे ॥
भारत की भूति नीति रीति की प्रतीति करा
दासता पिशाचिनी का पाप काट डालेंगे ॥
गोल मेज आलय में विजय-निनाद कर
सुन्दर स्वतन्त्रता स्वराज्य रत्न "लावेंगे" ॥१॥

'नरेन्द्र' वर्मा

(३९) "अरविन्दम्"

(२२६)

भागीरथी सकल कल्मष-नाशिनी के ।
जो आदि कारण तथा त्रिदिवेन्द्र वन्द्य ॥
जो पाप-ताप हरते जग को समस्त ।
सो चित्त में तव रहें "चरणारविन्द" ॥ १ ॥

(२२७)

कौमोदकी दनुज भेदन के लिये है ।
ये चक्र दुष्ट शिर छेदन के लिये है ॥
रक्षार्थ नाद करता यह पांचजन्य ।
है मोहता हृदय को "रुचिरारविन्द" ॥ २ ॥

'नरेन्द्र' वर्मा

---

(२२८)

कौमोदकी दनुजदम्भविभेदनाय ।
चक्रं प्रपन्नभवभीतिविदारणाय ॥
शंखः स्वभक्तपरिरक्षणसान्त्वनाय ।
भक्तालिरागजननाय "सदारविन्दम्" ॥ १ ॥

(२२९)

चन्माथिनो सकलपातकपुङ्गवानाम् ।
गंगायतः प्रसरति क्षणदा नराणाम् ॥
यल्लात्मित कमलया घृतभक्तवृन्दम् ।
भूत्यै भवेन्मम "हरेश्चरणारविन्दम्" ॥२॥

(२३०)

किंवा सुधारसमपास्य बुधा मदीयं ।
पादाम्बुजा सवमतीव मुदा भजन्ते ॥
तत्त्वमार्गणपरः परमार्भकोऽसौ ।
कृष्णो मुखे विनिदधाति "पदारविन्दम्" ॥३॥

(२३१)

यन्मानस हरति हारि मधुव्रतानां ।
यद्घ्राणतर्पणतया प्रथित जनानाम् ॥
स्थान विधातुरपि तद्भगवत्कराब्ज ।
स्पर्शाधिकाधिकतयैव "किलारविन्दम्"॥ ४ ॥

पो० कण्ठमणि शास्त्री

---

(२३२)

घुपकुलमदायप्राप्तकीर्तिस्त्वजातौ ।
भगवदवयवौपम्यागतश्रीमद यत् ॥

सदनमपि रमाया मन्यमानं स्वगात्र ।
जयति गुणितदित्थं "देवलोलारविन्दम्" ॥ १ ॥
पं० श्रीवर शास्त्री

---

(२३३)

अतः परं किन्नु सुजन्मता स्याच्च-
तुर्मुखस्यापि जगद्विधातुः ॥
जनिप्रदं विष्णुविभूषणञ्च ।
प्रशंसनीयं हि "ततोऽरविन्दम्" ॥ १ ॥
मिश्र परमानन्द शास्त्री

---

(३७) "विट्ठलेशः"

(२३४)

नृशंसक्षितीशे भुवं शासमाने ।
सदाचारशुभ्रांशुराहौ क्षपायाम् ॥
अविद्यात्मिकायां बभासे प्रकामं ।
रमेशकृपा भास्करो "विट्ठलेशः" ॥ १ ॥

(२३५)

गतिचयचूडा रत्नसम्पूजिताङ्घ्रि-
र्विविधविबुधवृन्दध्वस्तवादावदानः ॥

वाह रे कन्हैया तेरी अकल कहाँ लौं कहौं
निन्दा सों डर्‌यो न नैक ऐसी मति भायगी ॥
कहि दीजो उद्धव ये उनसों हमारे कहैं
इज्जत तुम्हारी कूबरी के सग "जायगी" ॥ २ ॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(२४०)

देव पन्नगी-सी भूमि व्याकुल परी है बाल
चलत उसास फुफकारन सुखायगो ॥
मारुत मलय मिलि बहत महीम मंद
मद घन बुन्द लागि देहन समायगो ॥
वेगि चलि 'प्रेम' सींघ देख नंदलाल हाल
नातर अतन तन तपन जरायगो ॥
औलों नहीं चैती ब्रजचद वह चद मुखी
जोपै कहूँ चैती चाँदनी में चुरि "जायगी" ॥ १ ॥

भट्ट श्रीबलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(२४१)

दीनानाथ दीन जान कान दे हमारी टेर
सुनहु नहीं तो दीनबंधुता नसायगी ॥

दुसह दुसासन सभा में चोर ऐंचत है
पंच पतिधारी हा उघारी दरसायगी ॥
हंस मम उज्ज्वल प्रशंस यदु वंस पै हू
कुयश करोंची की पताका फहरायगी ॥
'गोविंद' निरन्तर है अंतर की जानत हो
मेरी लाज जायगी तो तेरी लाज "जायगी" ॥ १ ॥

गोविंददत्त चतुर्वेद

---

(२४२)

लिखत रुक्मनी पत्र द्वारका के वासी कों ॥
हे करुनानिधि 'कृष्ण' उबारो मो दासी कों ॥
नारद मुनि मुख द्वार सुनौ गुनगान तिहारो ॥
वरूँ आपको नाथ यही प्रन मन में धारो ॥
मम भ्रात रुक्म शिशुपाल को वरन च्हहै दुखदायगी ॥
प्रन वेग आप राखो नहीं ज्ञान अर्जी ये "जायगी" ॥ १ ॥

किशनलाल 'कृष्ण'

---

(२४३)

काल का निराला चाला भाला विकराला देख
होस ने दिवाला डाला बुद्धि मिट जायगी ॥

भोजन मसाला 'मनि' मानिक सुमाला चारु
    कोमल दुसाला और बाला छूट जायगी ॥
अश्व वाजिशाला गजशाला धेनुशाला भव्य
    नव्य चित्रशाला रंगशाला छुट जायगी ॥
मत मतवाला बन अब मत बाला बन
    कृष्ण मतवाला बन तेरी बन 'जायगी" ॥ १ ॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(३९) "दीजिये"

(२४४)

कृष्ण भगवान धृतराष्ट्र के भवन जाय
    बोले एक बात ये हमारो सुन लीजिये ॥
'नवनीत' ये हू तो तिहारे भ्रात-पुत्र ही हैं
    इनको निर्वाह को उपाय कछु कीजिये ॥
हमतो तिहारे और इनके समान ही हैं
    होय ना कलेश ऐसे प्रेम रस भीजिये ॥
करिके सलाह युवराज दुर्योधन सों
    महराज ! उत्तर विचार मोहि "दीजिये" ॥ १ ॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(२४५)

जाके एक दूत ही को प्रबल प्रताप देख्यो

जारी लक मारे वीर अब कछु कीजिये ॥

अच्छ सुकुमार को सहित सैन मार दीनों

मच्छके बिदारे रच्छ सब छत जे जिये ॥

बार बार 'प्रेम' कर नाहीं में करत हतो

जब तो न मानी प्रभु अब सुन लीजिये ॥

जानकी न दैन, यह जान की है लैन नाथ !

जान की ही खैर जानि जानकी ही "दीजिये" ॥ १ ॥

बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(२४६)

पल बीत रहा युग-सा दुखदायक

हे वरदायक ! नेक पसीजिये ॥

चित चंचल, अंचल द्रौपदि-सी

सुवियोग विथा 'मनि' आप पकीजिये ॥

करुनाकर ! कष्ट कथा कब लौं

किहिसों कहि हौ अब तो सुन लीजिये ॥

(११२)

जन रंजन ईश निरंजन मो
दुखभंजन है सुख दर्सन "दीजिये" ॥ १ ॥

पो० 'मणि' शर्मा

---

(२४७)

प्रगटे पूरन ब्रह्म कृष्ण निज नन्द - भवन में ॥
गिरि-कन्या के नाथ जान यह अपने मन में ॥
आये गोकुल माँहि द्वार पे अलख जगायो ॥
सुनि जसुधा अनमोल रत्न ते थार भरायो ॥
निज द्वार आय कहने लगी जोगी भिक्षा लीजिये ॥
नट शंभु कह्यो मा लाल को दरस दिखा मम "दीजिये" ॥१॥

किशनलाल 'कृष्ण'

---

(२४८)

अहो मनमोहन बिहारी नटनागर जू
करके कृपा की कोर मेरी सुध लीजिये ॥
मैं हूँ पतित तुम पतितन पावन प्रभू
जेते भये पाप तेते नष्ट सब कीजिये ॥
गनिका अजामिल गजेन्द्र आदि तारे नाथ
'ब्रजेन्द्र' की बेर देर काहिको करीजिये ॥

करुणा के आकर दयाकर सुदास हू पै
मेटि भव-फन्द निज शरण सु "दीजिये" ॥ १ ॥

छन्नूलाल वर्मा 'व्रजेन्द्र'

---

(४०) "वैजयन्ती"

(२४९)

अहह जगति भूयोऽनार्यजुष्टेऽपि काले
कलिमलकलुषायाञ्चापि लोकीयवृत्तौ ॥
सदसद्विकचर्चा बोधिता देयहेया
जयतु कुसृतिमूढान् वाल्लभी "वैजयन्ती" ॥ १ ॥

पं० श्रीवर शास्त्री

---

(२५०)

प्राचेजनस्य नयने परिमोदयन्ती
लक्ष्मीं स्वकीयकिरणैः परितोषयन्ती ॥
सम्पूर्णरत्नकिरणान्परितो जयन्ती
संशोभतेऽच्युतगले वर "वैजयन्ती" ॥ १ ॥

मिश्र परमानन्द शास्त्री

---

(२५१)

है देवता मनुज जो अपना चरित्र
है निष्कलङ्क रखता, रहता पवित्र ॥
आधीन पीन जिसके मनमत्त दन्ती
उद्घोषमान उसकी यश-"वैजयन्ती" ॥ १ ॥

(२५२)

मेरे सशु हृदय में नयनाभिराम
श्रीबालकृष्ण बस जायँ, निकाम वाम ॥
कुन्देन्दु शुभ्र लसती लघुदन्त-पङ्क्ती
है लम्बमान जिनके गल "वैजयन्ती" ॥ २ ॥
पो० 'मणि' शर्मा

---

(४१) "प्रपद्ये"

(२५३)

यत्पादपद्ममकरन्दजुषोऽपवर्ग
जानन्ति शक्रवरुणेशमुखं तृणाय ॥
निष्किञ्चनप्रियमनन्तसुखाब्धिरूपं
तं भक्तवत्सलमहं शरणं "प्रपद्ये" ॥ १ ॥

(२५४)

श्रीरूपिणीं जनकजामपहाय पूर्व

कुब्जां हृदा किल मुदा परिषस्वजे च ॥

यस्तं प्रपन्नमनुजाऽऽश्रवतां दधाति

कृष्णं सतृष्णकरणः शरणं "प्रपद्ये" ॥ २ ॥

पं० कण्ठमणि शास्त्री

---

(२५५)

लोकोऽस्वतंत्र इव वर्तुमनन्यथापि

प्रायः कुशिष्टिनिगडायितराष्ट्रभूमौ ॥

तद्देव देहि झटिति प्रणयावलोकं

स्वातन्त्र्यमेव जनता शरणं "प्रपद्ये" ॥ १ ॥

पं० श्रीवर शास्त्री

---

(२५६)

गङ्गामदप्रचलितारुणरौद्रनेत्र

दुर्वृत्तवृत्तदमनं बलदेवदेवम् ॥

देव व्रजस्य परम व्रजवासिभक्त-

स्वान्तान्धकारहरणं शरण "प्रपद्ये" ॥ १ ॥

मिश्र परमानन्द शास्त्री

द्वादशाधिवेशन

पौष कृ० १, सं० ८८, ता० २५-१२-३१

(४२) "अँखियान में"

(२५७)

जब तें निहार्‌यो वह सुघर सलोनो श्याम
तब तें परी है अरी प्रेम पखियान में ॥
मेह छायो गगन सुनेह छायो चपला में
तरुन लपेट लवा लीनी बखियान में ॥
'नवनीत' प्यारे नद और सरिता हू चली
तजिकें मजाद सो न आवे कखियान में ॥
देह छायो सुरस अछेह प्रन मन छायो
नेह छायो प्यारी की अन्यारी "अँखियान में" ॥१॥

'कविरत्न' नवनीतजी

---

(२५८)

छबि व्रजभूषन में बिकीं व्रजबाल सबै
जानौ सत्य जोहत ही भेष सखियान में ॥

(११०)

प्रीतम विछोह कछु दूसरो न भावै मन
मधु छूटे जाय पूँछो दुःख मखियान में ॥
'रामाधीन' भूलै नहीं रावरी हसन नेक
माधुरी नहीं है जाके सम दखियान में ॥
आन लेवे हाल जोपे लाल निज सूरति को
देख लेवे कैसे हूँ हमारी "अँखियान में" ॥ १ ॥

रामाधीनलाल खरे

---

(२५९)

तेरे मुख चन्द को निकाई की बड़ाई महा
चरचा करत मैंने सुनी सखियान में ॥
तबही तें देखन को चाव चित मेरे भयो
घेरी रहौं द्यौस निश भौन रखियान में ॥
होरी को दिवस आज औसर मिलो है मोहि
नजर परो है इन मारी दुखियान में ॥
हाहा करि कहौं तो सों नेक तो लखन दे रे
नाखौना गुलाल 'कृष्ण' पड़ो "अँखियान में" ॥१॥

किशनलाल 'कृष्ण'

---

(२६०)

आई है गौने भये दिन चार सों 'प्रेम' की छटित बात तियान में ॥
बैठत है न घरी घर में भ्रमरी जिमि डोलत है गलियान में ॥
है नँदनन्द बड़ो छलछन्द छलै चित को छिनही बतियान में ॥
जो लखि पायगो तोहि नरीधरि जायगो नेह कोबीज*अँखियानमें॥१॥

(२६१)

तन अरसाने पर 'प्रेम' सरसाने नाथ
हिय हरसाने डोले कौन बगियान में॥
भोर दरसाने इतैं जोर सर † साने उतैं
रैन भरसाने कहो कौन गलियान में ॥
अंजन अधर लाल जावक लसत भाल
बिन गुन गर माल पाये अलियान में ॥
अरजी हमारी कहाँ कैसी कहौं कहाँ छाई
अजब अनोखो अरुनाई "अँखियान में" ॥ २ ॥

भट्ट बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(२६२)

अङ्ग अनङ्ग की और मचो सतरान लगो पति की पखियान में ॥
पूछन लागी सरोजमुखी रति की घतियाँ सुघरी सखियान में ॥

---

* बीज । † कामदेव ।

गोविंद जू कटि छीनी भई कुच पीन भये उमहे विखियान में ॥
आई नितम्बन में गुरुता अरु शीलता आई कछू "अँखियान में" ॥१॥

गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(२६३)

सुन्दर सरस तुव आनन की आभा लखि
होलै सुख शान्ति सुधा मोद बिचियान में ॥
बानी सुधा सरिता सों चखि के अमीय बिन्दु
मगन अथोर होत जीवन विहान में ॥
एहो प्रिय होयवारे प्यारे व्रजभूषणजू
देव तरु नाम तेरो जाहिर जहान में ॥
दीनन के तारन औ' भक्तन उबारन को
बहत दया को स्रोत तेरी "अँखियान में" ॥ १ ॥

(२६४)

एरे ए ! रतन ? तन पाय के रतन जैसो
मति न गँवाय नेक वादि बतियान में ॥
छोड़्यो कुल जाति भाई बन्धु को विशाल मोह
ये तो कृति ठीक कीनी तेने तुव जान में ॥
किन्तु मोह माया के न फन्द तें बचन पायो
आखिर तो उरझि पर्‍यो रंग-रतियान में ॥

भूलि के विराग भाव एरे डेढ़ नैन ? वारे
वस्यो रहै रात दिन प्यारो ? "अँखियान में" ॥ २॥
नरेन्द्र वर्मा विद्यार्थी

---

(४३) "शिशिर-वर्णन"

(२६५)

शिशिर मे सविता हू शशि के समान होत
जोति घट घाम में न गरमी दिखाती है ॥
'नवनीत' पश्चिम की पौन भरफान चलै
मान तजि मानती सँयोग सुख पाती है ॥
बरसत पाला ओढ़ि छिपत दुसाला तोहु
कम्पत करेजा तन तपन सुहाती है ॥
तेल तूल तरुनी तमोल मृग मद आदि
अम्बर मसालन ते शीत भीति जाती है ॥ १ ॥

(२६६)

सुन्दर सरस सोहैं महल मजे के मञ्जु
गरम गलीचन के फरस पटत हैं ॥
'नवनीत' विविध पदारथ चँगेरन में
मेवा फल फूल अनुकूल जो सटत हैं ॥

(१२१)

जैसी सजी सेज तापे विमल बिछौना बिछे
अम्बर अतर तर अंग में अटत है॥
कीने उपचार मैं विचार भाँति भाँति तऊ
बाला बिन पाला के कसाला ना कटत है॥२॥
'कविरत्न' नवनीतजी

---

(२६७)

कोमल अमल सेज मखमल बिछौना औ'
अगर अँगीठी भौन बीच सरसाई है॥
शाल औ' दुशाला ओढ़ि मादक सुप्याला पिये
लेकर सुबाला 'प्रेम' सोवत रजाई है॥
पान की सुघोरी घरी विविध मसालेदार
सार मुश्क अम्बर सम्हार खुद खाई है॥
प्यारी को खवाई रति अद्भुत जमाई आज
और सों सवाई रितु शिशिर सुआई है॥ १ ॥

(२६८)

सरस समीर सीर तीर-सी करत पीर
घोर ना घरात शीत भीत परिवौ करै॥
मोखन झरोखन में परदा लगाय फेर
अगर अँगीठी धूम खूब गिरिवौ करै॥

आवत न भौन ते सुगौन की जु बात नेक
मादक चढ़ाय 'प्रेम' बात छिरिबौ करै ॥
दोऊ मिलि सेज पे जु नवलविहारी राधे
एक ही रजाई में रजाई करिबौ करै ॥२॥

भट्ट बलदेव शर्मा 'प्रेम'

---

(२६९)

बार-बार प्रेरत समीर दूतिका के तुल्य
जाड्यता से जाडन अनेक दुख दागैरी ॥
छोटो करि दिवस दिनेश की किरण दाबि
रजनी बढ़ायकै समस्त निशि जागैरी ॥
परदे रजाई बहु करत दुलाई संग
खीझि खिसियाने कहूँ अंत नहिं भागैरी ॥
दूरी जान कंत को एकंत हू दुरे पै सखी
विवश दुरत सों हिमत हिय लागैरी ॥ १ ॥

(२७०)

पच्छिम हिमाद्रि के सुहिम का पसारा हुआ
भारत में आड़ है न उन्नत किवाड़े की ॥
स्ववश रजायसी के दूर है रजाई वस्त्र
वायु पराधीनता है लेत सुधि हाड़े की ॥

(१२३)

'रामाधीन' गरमी गवाँदी लछमी की सब
ज्ञान रूपी दिन भी छिपा है, छाँह बाड़े की ॥
सुखद स्वराज्य भानु कबधौं उदित होगा
कबधौं मिटेगी हाय रात यह जाड़े की ॥ २ ॥
रामाधीनलाल खरे

---

(२७१)

शीतल बहत पौन कौल बरसावत है
कंज मुरझान लगे जलज मजाई है ॥
अगनि सुहात घाम रवि को तपन नाहिं
ठौर ठौर देशन में छाई सरदाई है ॥
'कृष्ण' निज भौनन ते कढ़त नहीं है कोऊ
ऐसे समै जावन की सुरत चढाई है ॥
कीजिये विचारी सीख मानिये हमारी पिय
करौ ना तयारी ऋतु शिशिर सुहाई है ॥ १ ॥

(२७२)

जब तैं मन भावन अंत गये तब तैं विरहानल ष
भइ व्याकुल सेज परो तरफौ तन सोत समीर ल

कर जोर कहौं तुमसों इतनो सुन साहुटनीन हमें तरसौ।
जहँ प्रीतम वास हमारो करै सुदया कर जाय उतै बरसौ॥२॥

किशनलाल 'कृष्ण'

---

(२७३)

छाई है धरा पै जोर सोर सों शिशिर ऋतु
सरस सयोगिन को सुख सरसाती है॥
'गोविंद' गलीचा गद्दा गुलगुले गद्दार
तकिया सुखद सौर गाला को सुहाती है॥
मृग मद धूम धाम धायन धुकाये तौहू
पाला की कसक उर अन्तर समाती है॥
अगिन दुशाला बिन छिनन बिताती दन्त-
पाँति हू कँपाती करै थर-थर छाती है॥१॥

गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(४४) "शिशिरवर्णनम्"

(२७४)

यभन्यवधूशोषस्वादुस्तृणतनूनपात्।
रुजुप्राणिसंश्लेषक्रूरस्तुहिनमारुतः॥१॥

(२२५)

गतवित्तजनस्याङ्गेवाद्यकान्तिश्च कौ रवेः ।
विरहिप्रमदावक्त्रौपम्यञ्च भजते शशी ॥ २ ॥

पं० श्रीवर शास्त्री

(२७५)

नीशारनिस्सारतुषारराश्योर्यूनोर्हृदुल्लासकरः सुखश्रीः ।
सीत्कारशिक्षां ददद्ङ्गनाभ्यः कामप्रदोऽयं शिशिरः शुभर्तुः ॥ १ ॥

(२७६)

प्रातर्हिमेनोद्विजिताः पुमांसो गेहेषु वीथीषु परिभ्रमन्तः ।
कृष्णेतिनाम्नैव हिमं सुदूरं कुर्वन्ति पुण्यैः शिशिरः शुभर्तुः ॥ २ ॥

(२७७)

क्षेत्रेषु सस्योपरि काननेषु चाम्पेयपत्रोपरि निष्पतन्तः ।
विप्रुट्समूहास्तुहिनस्य रात्रौ सूर्योदये मौक्तिकवद्विभान्ति ॥ ३ ॥

(२७८)

ग्रामेष्वरण्येषु च यत्र तत्र कृत्वाऽनलाधानमपास्तशैत्याः ।
तत्रोपविष्टाः पुरुषाः समन्ताद् गायन्ति कृष्णादिकथां पवित्राम् ॥ ४ ॥

मिश्र परमानन्द शास्त्री

कर जोर कहौं तुमसों इतनी सुन माहुटनीन हमैं तरसौ।
जहँ प्रीतम वास हमारो करै सुदया कर जाय उतै बरसौ॥२॥

किशनलाल 'कृष्ण'

---

(२७३)

छाई है धरा पै जोर सोर सों शिशिर ऋतु
सरस सयोगिन को सुख सरसाती है॥
'गोविंद' गलीचा गद्दा गुलगुले गद्दवार
तकिया सुखद सौर गाला की सुहाती है॥
मृग मद धूम धाम धायन धुकाये तौहू
पाला की कसक उर अन्तर समाती है॥
अगिन दुशाला बिन छिनन बिताती दन्त-
पाँति हू कँपाती करै थर-थर छाती है॥१॥

गोविन्ददत्त चतुर्वेद

---

(४४) "शिशिरवर्णनम्"

(२७४)

नव्यभव्यवधूशेषस्वादुस्तृणतनूनपात्।
अनृजुप्राणिसंश्लेषक्रूरस्तुहिनमारुतः॥ १॥

(१२५)

गतवित्तजनस्याङ्गेवाद्यकान्तिश्च कौ रवेः ।
विरहिप्रमदावक्त्रौपम्यञ्च भजते शशी ॥ २ ॥

पं० श्रीवर शास्त्री

---

(२७५)

नीशारनिस्सारतुषारराश्योर्यूनोर्हृदुल्लासकरः सुखश्रीः ।
सीत्कारशिक्षां ददङ्गनाभ्यः कामप्रदोऽय शिशिरः शुभर्तुः ॥ १ ॥

(२७६)

प्रातर्हिमेनोद्विजिताः पुमांसो गेहेषु वीथीषु परिभ्रमन्तः ।
कृष्णेतिनाम्नैव हिमं सुदूरं कुर्वन्ति पुण्यः शिशिरः शुभर्तुः ॥ २ ॥

(२७७)

क्षेत्रेषु सस्योपरि काननेषु चाम्पेयपत्रोपरि निष्पतन्तः ।
विप्रुट्समूहास्तुहिनस्य रात्रौ सूर्योदये मौक्तिकवद्विभान्ति ॥ ३ ॥

(२७८)

ग्रामेष्वरण्येषु च यत्र तत्र कृत्वाऽनलाधानमपास्तशैत्याः ।
तत्रोपविष्टाः पुरुषाः समन्ताद् गायन्ति कृष्णादिकथां पवित्राम् ।

मिश्र परमानन्द

(४५) "पातु वः"

(२७९)

जगदुद्धरणप्राय: संहितस्वान्तकोविदान् ।
देवः कोऽपि सदाऽपायात्सदाचारांश्च "पातु वः" ॥ १ ॥

पं० श्रीवर शास्त्री

---

(२८०)

चञ्चच्चन्द्रिकचन्द्राभचन्द्रकालंकृतिप्रियः ।
नन्दानन्दकरः कृष्णः फणाकेलिः स "पातु वः" ॥ १ ॥

(२८१)

गोपारब्धमखं निवार्य सहसा गोवर्धनं स्वार्चयत् ।
धृत्वा सव्यकरे च त व्रजजनान्संरक्ष्य शक्रस्य यः ॥
भङ्क्त्वाऽखर्वमदं चकार च कृपां वन्दारुमन्दारकः ।
कालिन्दीतटकेलिकौतुककरः सः श्रीहरिः "पातु वः" ॥२॥

मिश्र परमानन्द शास्त्री

श्रीद्वारकेशो जयति

गो० श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोली के मंगलमय (फा० कृ० २) जन्मोत्सव पर श्रीविद्या-विभाग द्वारा सन्मानोपाधि तथा पदक प्रदान।

संख्या	नाम	ग्राम	सन्मानोपाधि	विशेष
१.	पं० कण्ठमणि शास्त्री*	कांकरोली	काव्यालंकार	स्वर्णपदक
२.	पं० जटाशंकर शास्त्री	,,	व्याख्यानालंकार	,,
३.	पं० वसंतराम शास्त्री	अहमदाबाद	शुद्धाद्वैतभूषण	,,
४.	पं० नवनीत चतुर्वेद*	मथुरा	कविताकलाधर	,,
५.	पं० श्रीवर शास्त्री	,,	विद्यालंकार	उपाधिपत्र
६.	पं० गोपालराव शास्त्री	कांकरोली	पुराण-विशारद	,,
७.	पं० बलदेवशर्मा 'प्रेम'*	गोकुल	कविभूषण	,,
८.	पं० ज्येष्ठाराम शास्त्री	उमरेठ	सत्सिद्धान्तविशारद	,,
९.	पं० जयेन्द्रनाथ शास्त्री (परीक्षोत्तीर्णता पर)	इन्दौर	व्याख्यान-भूषण व्याख्यान-विशारद	रजतपदक
१०.	पं० रमणलाल शर्मा (परीक्षोत्तीर्णता पर)	उमरेठ	व्याख्यान-विशारद	,,
११.	पं० गोपाल शर्मा चतुर्वेद	मथुरा	ज्योतिर्भूषण	उपाधिपत्र
१२.	पं० केदारनाथ शर्मा	,,	,,	,,

* इन व्यक्तियों को कविता-विषय पर सन्मानोपाधि प्रदान की गई है।

संख्या	नाम	ग्राम	सन्मानोपाधि	विशेष
१३.	रामाधीनलाल खरे*	रीवाँ	कविभूषण	उपाधिपत्र
१४.	नारायणलाल वर्मा*	कांकरोली	काव्य-कोविद	,,
१५.	छन्नूलाल वर्मा	,,	कला-कोविद	,,
१६	पं० उपेंद्रनाथ राहीकर	,,	मंत्र-विशारद	,,
१७.	पं० भगवद्दत्त शर्मा	सवाई माधोपुर	कथाभूषण	,,

संचालक
श्रीविद्या-विभाग
कांकरोली